ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

अप्रैल, 2013

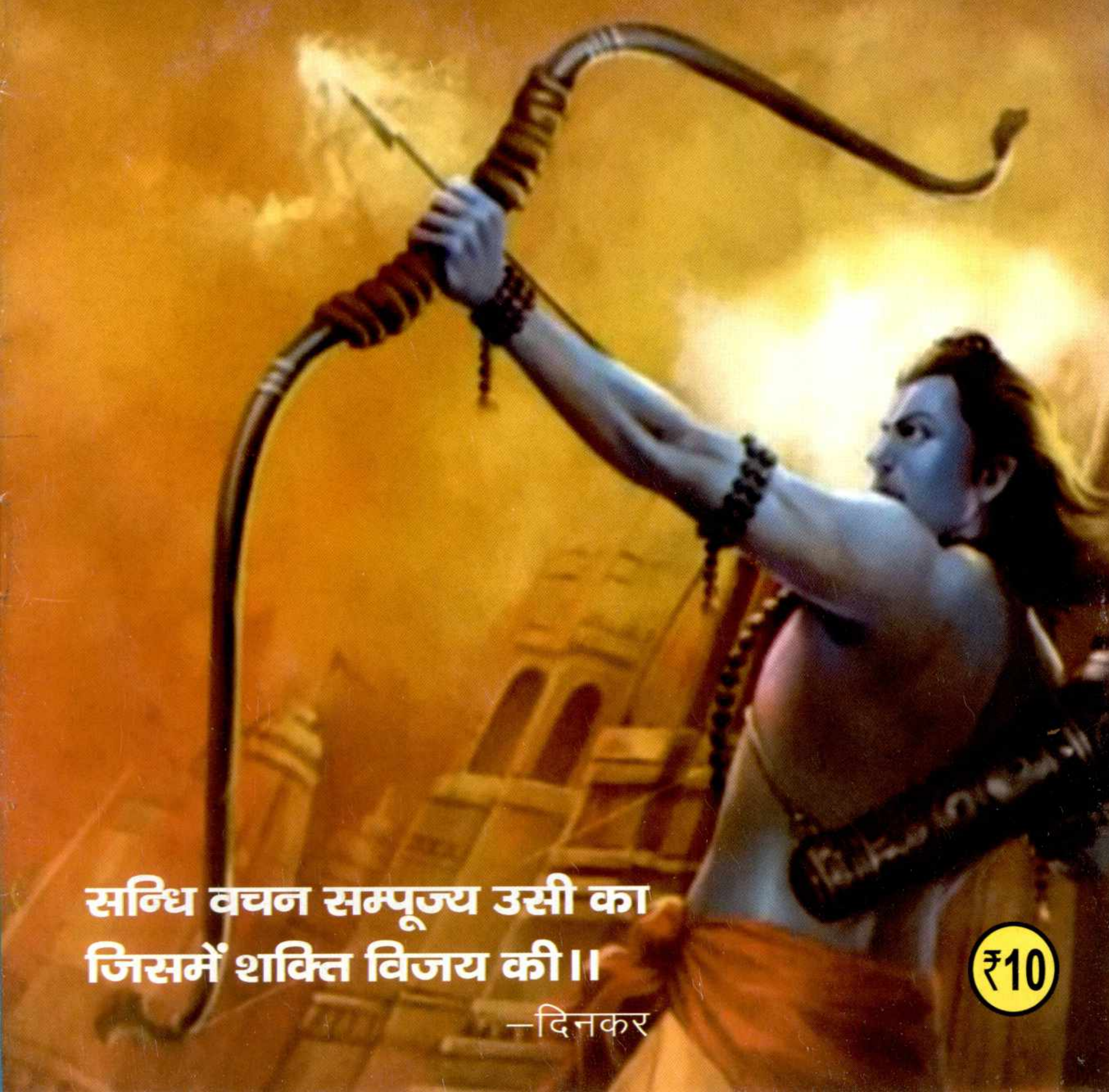

सन्धि वचन सम्पूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।।

—दिनकर

₹10

आर्य समाज जीन्द जंक्शन द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द जयंती समारोह में सम्बोधित करते हुए आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा, स्वामी वेदानन्द जी, श्री सूरजमल आर्य जुलानी, श्री सुभाष श्योराण, डायरैक्टर इंडस शिक्षण संस्थान, प्रो॰ ओम कुमार आर्य, उपप्रधान आ॰प्र॰स॰हरियाणा, पं॰ चन्द्रभानु आर्य सम्पादक शाँतिधर्मी, प्रधान मा॰ सतबीर आर्य जुलानी, मंत्री मा॰ पृथ्वी सिंह मोर, संचालक सहदेव समर्पित, डा॰ राजमोहिनी सूद, चौ॰ सुन्दर सिंह खर्ब तथा भजन प्रस्तुत करती प्रतिभा आर्या व सुमेधा आर्या।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

अप्रैल, २०१३

वर्ष : १५ अंक : ३ चैत्र २०७०
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	: १०.०० रु०
वार्षिक	: १००.०० रु०
आजीवन	: १०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

यदि दुष्ट दिमाग आतंक फैलाता है तो अच्छे दिमाग वाले लोगों को मूकदर्शक बनकर नहीं रहना चाहिए।

–डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम

क्या? कहाँ?....

आलेख

मानवता के मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ६
कितनी है इस सृष्टि की आयु ११
प्रेम करना सीखो तो सही १४
डॉ० बाल कृष्ण की साहित्य साधना १७
शिक्षा से ही होगा सामाजिक परिवर्तन २०
सिखा बंधन गुरु मंत्र और आचमन (संध्या रहस्य) २२
आलू और स्वास्थ्य २४
दायित्व तो हमारा और आपका भी है (अंततः) ३४

कहानी/प्रसंग

गरीबी क्या होती है–२१, देवभूमि भारत–२७, देवी-देवता–२८, एडजस्टमेंट–२८

कविताएँ– ५, १०, २७

स्तम्भ–आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ७ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ८, बाल वाटिका २६, भजनावली २९

साथ में : आर्य पुत्री ने बढ़ाया लंदन में मान, समाचार सूचनाएँ

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

विशो विशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः।। ८७

जन जन के शुभ अतिथि अग्नि को धन अन्नों से पुष्ट करें।
बहुत अधिक जो प्रिय है उसको हवि देकर संतुष्ट करें।।
उसकी बलकृति' के मननों से भरी हुई बोलें वाणी।
गृहकल्याणमयी स्तुति गावें सब कुछ भर पावें प्राणी।।

शब्दार्थ : १ बल के कार्यों का विचार करने से

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

आस्तिकता और चमत्कार

❒ चन्द्रभानु आर्य

एक विदेशी विचारक ने कहा था कि दुनिया में और कहीं हो न हो भारत में भगवान अवश्य है। क्योंकि कोई भी इस देश को बसाना नहीं चाहता, फिर भी यह बसा हुआ है; यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। नास्तिक विचार वाले लोग भगवान के बारे में जो मरजी कह देते हैं। उनकी भगवान से सबसे बड़ी शिकायत यह होती है कि इतनी गड़बड़ हो रही है फिर भी भगवान कुछ करता क्यों नहीं। इस ब्रह्माण्ड में इतना कुछ हो रहा है जो मनुष्य कर नहीं सकता फिर भी उन्हें यह सब दिखाई नहीं देता। लेकिन जो काम मनुष्य कर सकता है, मनुष्य को ही करने चाहिएँ, मनुष्यों के करने से ही उन कार्यों की सार्थकता है, उन कार्यों के लिए भगवान को दोष देता रहता है, और फिर एक नाजुक बच्चे की तरह कह देता है कि जा भगवान मैं तुझे नहीं मानता। तू है ही नहीं। भगवान को इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि कोई उसे मानता है या नहीं। कोई उससे बात करे (उपासना) तो इससे उसको कोई लाभ नहीं होता। जो उससे बात करता है, वही इससे लाभ उठाता है। नास्तिक भी दु:ख होने पर रोते बिलखते हैं, सुख होने पर खुश होते हैं। कोई गलत कार्य करते समय उनको भी कोई रोकने की प्रेरणा सी करता अनुभव होता है। अच्छा कार्य करने पर उनको भी आत्म-संतुष्टि मिलती है।

आज लगता है कि आस्तिक लोग नास्तिकों से ज्यादा नास्तिक हैं। उसे ईश्वर की सत्ता के स्पष्ट दिखाई देने वाले लक्षणों, युक्तियों, प्रमाणों से कुछ लेना देना नहीं है। उसे तो वह चमत्कार चाहिए जिसे वह चमत्कार समझता है। यह विराट् ब्रह्माण्ड, यह अद्‌भुत व्यवस्था, प्रकृति के नियम, कर्म-फल व्यवस्था, यह सृष्टि रचना-- उसे चमत्कार नहीं लगता। ये तथाकथित आस्तिक लोग समोसे खाकर धन प्राप्ति या नौकरी मिलने को चमत्कार मानते हैं। कादियानी पैगम्बर ने भविष्यवाणी की थी किसी के मरने की। कई वर्ष बाद उस महापुरुष को छुरे से मार दिया गया। आज तक वे इसी को चमत्कार प्रचारित कर रहे हैं। आस्तिक कहलाए जाने वाले लोग अविवाहित स्त्री से संतान होना, मुरदे का जी उठना आदि चमत्कारों पर आधारित हैं। ये चमत्कार न हों तो उनकी आस्तिकता का आधार ही समाप्त हो जाता है। आप धार्मिक चैनल देखें। कोई गुरु, कोई भगवान? अपने आप को पूरा भगवान सिद्ध करने के लिए अपने अनुयायियों के अनुभव सुनवाने पर पर्याप्त समय खर्च करता है। आध्यात्मिक कही जाने वाली पत्रिकाओं में अनेक पृष्ठ इसी कार्य के लिए होते हैं। चेलों के जो अनुभव होते हैं वे इस तरह के नहीं कि हमारी इस तरह से आत्मिक उन्नति हो गई, हमने योग में यह गति प्राप्त कर ली, बल्कि चमत्कारों की साक्षियाँ होती हैं। असाध्य रोग ठीक हो गया, नौकरी मिल गई। व्यापार में लाभ हो गया-- । यह आस्तिकता तो नास्तिकता से भी ज्यादा हानिकारक है।

आस्तिकता जीवन की आधारशिला है और आस्तिकता की आधारशिला है परमेश्वर की सर्वव्यापकता और न्याय व्यवस्था को जानना और मानना। अच्छी प्रकार जानकर ही मानने से कुछ लाभ हो सकता है। जो यह मानते और जानते हैं कि परमेश्वर न्यायकारी है, वह कर्मों का फल पूरा-पूरा देता है, और यह जानकर परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार आचरण करते हैं वे ही सच्चे आस्तिक हैं। वह परमेश्वर का भक्त और प्रशंसक भी है। जो यह सोचता है कि किसी व्यक्ति विशेष की सिफारिश से परमेश्वर हमारे पापकर्मों का फल नहीं देगा या पापों के बदले में सुख देगा-- वह वास्तव में परमेश्वर का सबसे बड़ा निन्दक और नास्तिक है। आप्त पुरुषों के उपदेश से और परमात्मा की उपासना करने से हम आगे पाप करने से हट जाते हैं यह क्या कोई छोटा चमत्कार है।

यदि आस्तिक होने के बाद भी व्यक्ति के कर्म में सुधार नहीं आया तो आस्तिक होने का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए आस्तिकता का मूल आधार है परमेश्वर की सर्वव्यापकता। परमेश्वर संसार के कण-कण में व्यापक है। हमारे हृदय में भी। वह किसी भी कार्य को करने से पहले, हमारे मन में संकल्प आते ही जान लेता है। वह हमारे अच्छे बुरे कर्मों को ठीक प्रकार से जानता है। उससे छुपकर कोई पाप नहीं किया जा सकता और पाप करने के बाद उसके दु:ख रूप फल से किसी भी प्रकार से बचा नहीं जा सकता। -- यही आस्तिकता की आधारशिला है। किसी चौथे, सातवें आसमान या किसी सतलोक में बैठा हुआ भगवान न तो हमारे कर्मों को जान सकता है और न फल दे सकता है। उसको वहाँ बैठाकर फिर हमें उसके संदेश वाहकों की कहानी बनानी पड़ती है। फिर इसकी जांच का चक्कर-- कि कौन संदेशवाहक झूठा है कौन सच्चा? फिर इसके प्रमाण के लिए चमत्कार!! और 'चमत्कार' तो सारे ही करना जानते हैं।

संभवत: उस विदेशी विचारक ने ठीक ही कहा कि इस देश में कोई भगवान अवश्य है। कोई भगवान का दूत बनकर खा रहा है। अपने अपने अलग अलग भगवान् बनाकर खा रहे हैं। कोई भगवान को गाली देकर खा रहा है। भगवान की भक्ति से मिलने वाले आत्मिक आनन्द को प्राप्त करने के बारे में भी कोई सोचे तो सचमुच में चमत्कार हो जाए।

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी मार्च 2013 पढ़ा। शांति के असीम सागर में डुबकी लगाने का मौका मिला। मुखपृष्ठ पर रंगों का समावेश देखकर सोचा होली पर कोई विशेष सामग्री होगी, पर ऐसा नहीं था। ऐसा होना चाहिए। स्वामी ओमानन्द को शत-शत नमन। शान्ति-प्रवाह हमेशा की तरह प्रेरक है। ऋषियों ने शिक्षा पद्धति के बारे में बताया है, हमें उनका अनुसरण व धन्यवाद करना चाहिए, उनकी इस असीम कृपा के लिए। आधुनिक शिक्षा-तंत्र ध्वस्त हो चुका है। आज का बच्चा न जाने क्या पढ़ रहा है और क्या पढ़ना चाहता है। सरकार को शिक्षा तंत्र पर ध्यान देना चाहिए, ताकि बच्चों के भविष्य पर प्रतिकूल असर न पड़े। आज पता नहीं कैसे लोग शिक्षा नीति बना रहे हैं। तमिलनाडु में छटी कक्षा में रजनीकांत का पाठ पढ़ाया जाएगा। ऐसे तो ये कल सन्नी लियोन का पाठ पढ़ाएंगे। नरसिंह सोनी के विचार अच्छे लगे। अमृत वचनावली में वास्तव में अमृत वचन हैं। राजेशार्य आट्टा द्वारा लिखा लेख वास्तव में पठनीय व विचारणीय है। आज दयानंद के महत्व को खुद हिन्दू समाज नहीं पहचान पा रहा है। दयानंद ने दुनिया के लिए जीवन अर्पित कर दिया। डॉ0 विवेक की शोध यात्रा सचमुच अद्भुत है और युवाओं के लिए प्रेरणस्रोत है कि हमें भी बहुमूल्य ग्रंथों को सहेज कर रखना चाहिए। पुनर्जन्म समीक्षा ने बहुत सी जिज्ञासाओं को शांत किया। इतिहास कथा में बलिदानी कुमारिल भट्ट के बारे में पढ़कर हृदय द्रवित हो उठा। सामाजिक चितंन में युवा वर्ग के बारे में बताया है। आज युवाओं के चारों ओर भयावह माहौल है, इसलिए वे पथ से भटक रहे हैं।

नरेन्द्र कुमार सोनी
ग्राम पोस्ट बिठमड़ा, जिला हिसार

शांतिप्रवाह में शिक्षा के संबंध में आपके विचार प्रभावी हैं। व्यक्ति की सब प्रकार की उन्नति ही शिक्षा पद्धति का उद्देश्य होना चाहिए, लेकिन आज शिक्षा के उद्देश्य ही बदल गए हैं। मैंने अपने अध्यापक साथियों में इस शांतिप्रवाह पर चर्चा की, सभी को यह अच्छा लगा। मैं सभी अध्यापक पाठकों से निवेदन करना चाहूंगा कि वे यथासंभव छात्रों को अच्छे मनुष्य बनने की शिक्षा अवश्य दें।

राममेहर सिंह प्राथमिक शिक्षक
ढ़ाणी पीरांवाली, जिला चुरु, राजस्थान

शांतिधर्मी का जुनून

'शांतिधर्मी का मैं
नहीं करता झूठा गुणगान।
इसे पढ़कर कहे हर पाठक,
यही तो है सभी गुणों की खान।

'शांतिप्रवाह' सम्पादकीय
है सब से निराला।
इसे पढ़ने के बाद हो जाए
अंधेरे मन में भी उजाला।।

चन्द्रभानु आर्य जी है बड़े विद्वान्
तभी तो दिनों दिन बढ़ रही इनकी शान।

'अमृतवचनावली' दे मन को सुकून।
इसे पढ़ने का बढ़ रहा तभी तो जुनून।।
इसके लेख बढ़ाते हमारी जानकारी,
प्रबुद्ध पाठक तभी तो दिल से हैं आभारी।।

'बाल-वाटिका' पढ़कर बच्चे होते खुश।
सुबह पहले पढ़ें इसे बाद में करते दांतों में ब्रुश।।
विद्वान् लेखकों की रचनाएँ होती हैं निराली।
इन्हें पढ़कर अंधेरे मन में हो जाती दीवाली।।

प्रो० शामलाल कौशल
मकान नं० ९७५ बी/ २०, ग्रीन रोड रोहतक-१२४००१

शांतिधर्मी का मार्च अंक बहुत अच्छा लगा। मुखपृष्ठ को देखकर मन मुदित हो गया। सभी लेखों/ रचनाओं के अतिरिक्त मुझे 'पुनर्जन्म समीक्षा' और 'स्वप्न क्यों आते हैं'-- लेख बहुत अच्छे लगे। विद्वान् लेखकों ने पूरी योग्यता के साथ युक्तियाँ प्रस्तुत की हैं। स्वामी आत्मानन्द जी का लेख एक उच्च कोटि का मनोवैज्ञानिक लेख है। ईश्वर आर्य जी ने पुनर्जन्म के संबंध में उठने वाले प्रायः सभी प्रश्नों पर चर्चा की है। पर यह विषय इस प्रकार का है कि प्रश्नों के उत्तर ही दिये जा सकते हैं- किसी को मनाया नहीं जा सकता। वह तो तभी होगा-- जब ईश्वर की कृपा होगी। 'अन्ततः' बहुत अच्छा आ रहा है। डॉ० विवेक आर्य जी ने आतंकवाद के संबंध में सही कहा है कि आतंकवाद को केवल आतंकवाद से ही रोका जा सकता है। इस विषय में हमें राम व कृष्ण की नीति अपनानी होगी।

आस्तिक राव
मेन बाजार, हेली मण्डी, जिला गुड़गांव

भारतीय उच्चायोग, लन्दन में

डॉ. कविता वाचक्नवी को 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान' प्रदत्त

आर्य पुत्री ने बढ़ाया लन्दन में भारत का मान

लन्दन, 24 मार्च 2013, भारतीय जीवन मूल्यों के वैश्विक प्रचार-प्रसार की संस्था 'विश्वम्भरा' की संस्थापक-महासचिव डॉ. कविता वाचक्नवी को विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग, लंदन द्वारा इण्डिया हाउस में आयोजित समारोह में 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान' प्रदान किया गया। इस अवसर पर भारत के उच्चायुक्त महामहिम डॉ. जे भगवती ने उन्हें नकद राशि, स्मृति चिह्न, शॉल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। उन्हें यह सम्मान मुख्यत: इन्टरनेट व प्रिंट मीडिया द्वारा भाषा, साहित्य, संस्कृति व पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया।

उल्लेखनीय है कि कविता वाचक्नवी आर्यसमाज के विख्यात विद्वान; यमुनागर निवासी, पंडित इंद्रजित् देव की सुपुत्री हैं। अमृतसर में जन्मीं कविता वाचक्नवी समाज, भाषा-विज्ञान तथा काव्यसमीक्षा जैसे विषयों में 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' हैदराबाद से एम फिल और पीएचडी अर्जित करने के बाद सपरिवार लन्दन में रह रही हैं और स्वयं भी आर्यसमाज के क्षेत्र में किए गए अपने लेखन, प्रचार व कार्यों के लिए विख्यात हैं। उनकी पुस्तक 'महर्षि दयानंद और उनकी योगनिष्ठा' (1984) महर्षि के योग-पक्ष पर लिखी गई एकमात्र पुस्तक मानी जाती है। स्वामी सत्यप्रकाश जी विषयक उनके संस्मरणों की शृंखला बहुत चर्चित रही। थाईलैंड आदि देशों में किए गए उनके वेदप्रचार की व्यापक धूम रही। वैदिक विद्वान् व वैज्ञानिक डॉ. हरिश्चन्द्र से उनका विवाह महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर में तय हुआ था। पंडित युधिष्ठिर मीमांसक, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती और आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी सहित अनेक दिग्गज वैदिक विद्वान् उनके विवाह में सम्मिलित हुए थे। आर्यसमाज की पत्र पत्रिकाओं सहित भारत के अनेक समाचार पत्रों में उस अनूठे विवाह की खूब चर्चा होती रही थी।

भारतीय उच्चायोग द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान' ग्रहण करते हुए डॉ. कविता वाचक्नवी ने अपने दादाश्री व पिताश्री का विशेष उल्लेख किया व लाहौर से हिमाचल और पंजाब तक उनके किए कार्यों व बलिदानों को उपस्थितों के साथ बाँटते हुए बताया कि कैसे हिन्दी सत्याग्रह में जेल में रहने से लेकर हिमाचल को हिन्दीभाषी राज्य का दर्जा दिलाने तक के लिए उनके परिवार ने कष्ट सहे। वाचक्नवी ने अपना सम्मान उन्हीं को समर्पित करते हुए कहा कि वे यह सम्मान उनके प्रतिनिधि के रूप में ग्रहण कर रही हैं। उन्होंने राजदूत व उच्चायोग से अनुरोध किया कि ब्रिटेन में भारतीय उच्चायोग की वेबसाईट को द्विभाषी बनाया जाना चाहिए व उसे अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में भी उपलब्ध होना चाहिए।

विज्ञप्ति के अनुसार इस समारोह में दो अन्य विशिष्ट हिंदी सेवियों तथा एक हिंदी संस्था को भी सम्मान प्रदान किए गए। जॉन गिलक्रिस्ट हिन्दी शिक्षण सम्मान से यॉर्क विश्वविद्यालय के विख्यात भाषाविद् प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा को तथा डॉ. हरिवंश राय बच्चन हिन्दी साहित्य सम्मान से बर्मिंघम के हिंदी लेखक डॉ. कृष्ण कुमार को सम्मानित किया गया जबकि नाटिङ्घम की संस्था 'काव्य रंग' को भी सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर अपना वक्तव्य हिन्दी में देते हुए उच्चायुक्त डॉ. जैमिनी भगवती ने कहा कि वे स्वयं असमिया भाषी होते हुए दिल्ली में रहने के कारण हिन्दी में व्यवहार करते रहे हैं व उनकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रही है। उन्होने जोर देकर कहा कि निजी रूप से वे त्रिभाषा नीति को भारत के लिए श्रेयस्कर समझते हैं। विश्व पटल पर भारत से बाहर के लोगों के लिए अंग्रेजी, समस्त भारतीय कार्यकलापों के लिए हिन्दी व अपनी मातृभाषा अथवा एक प्रांतीय भाषा प्रत्येक भारतीय को अवश्य सीखनी, पढ़नी चाहिए।

लंदन स्थित इंडिया हाउस में हुए इस पुरस्कार समारोह में उप उच्चायुक्त डॉ. वीरेंद्र पाल और उच्चायोग में मंत्री 'समन्वय' एसएस सिद्धू भी उपस्थित थे। सिद्धू जी ने अपना स्वागत वक्तव्य हिन्दी में दिया व धन्यवाद वक्तव्य भी डॉ. वीरेंद्र पॉल द्वारा हिन्दी में ही दिया गया। कार्यक्रम का संचालन उच्चायोग के श्री बिनोद कुमार ने सफलतापूर्वक किया। ब्रिटेन के विभिन्न नगरों से आए लेखक, पत्रकार तथा कला एवं साहित्य क्षेत्र के भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में समारोह में उपस्थित थे।

धर्म मेघ का आह्वान

पं० चमूपति जी

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्।।४।।

ऋषि – भृगु तपस्वी

(पवमान) हे पवित्रता के पुतले! (वृषा हि असि) तुम धर्म मेघ ही तो हो। (भानुना द्युमन्तम्) एक अलौकिक प्रकाश से चमक रहे। (त्वा स्वर्दृशम्) तुझ आत्मदर्शी को (हवामहे) हम प्रजाजन पुकार पुकार कर बुलाते हैं।

धर्म मेघ प्रजाओं का प्यारा होता है। वही जल जो मोरियों और गलियों में सड़ रहा था, सूर्य के प्रताप से तप तप कर वाष्प बन गया है। पृथिवी का पानी पृथिवी से ऊपर उठ गया है। उसका सवन हुआ है। अब वह कैसा निर्मल है। लो! वह हवा के कंधों पर चढ़ गया। अब उसका सिंहासन आकाश पर है। चांद से, तारों से, सूर्य से, उसकी रात दिन अठखेलियां हैं। जिस पृथिवी ने उसे कुछ दिन पूर्व संतप्त कर अपने से दूर हटा दिया था, अब वही पृथिवी आंखें उठाए उसकी बाट जोहती है। पृथिवी का गला सूख गया है। उससे आवाज नहीं निकल सकती। मंगलमय मेघ! बरसो! सूखी भूमि की छाती फिर से हरी कर दो।

ऐसे ही योगी– इन्हीं गलियों, बाजारों में बसने वाला साधारण मनुष्य ही तो था। उसने प्रकाश का रास्ता लिया। तपस्या की किरणों पर सवार हो गया। ऊँचा उठा। देवयान का यात्री बना। अब मानो वह इस जमीन का वासी ही नहीं। उसे जितनी आंच दो, वह उतना अधिक चमकता है, उड़ता है। उसकी आकृति ही तेजोमय है। उसके मुखमण्डल पर एक विशेष प्रकाश है। श्याम–वर्ण धर्म–मेघ चांद सूर्य की झांकियों का झरोखा बन रहा है।

उसकी आंखों में सपनों का स्वर्ग बस रहा है। जो बात साधारण जनों की आंखों से ओझल है, वह उस अध्यात्म के द्रष्टा के आगे प्रकट है। स्थूल जगत् उसकी दृष्टि में एक सूक्ष्म संसार का बाह्य रूप है। उसकी दुनिया भावनाओं की, आशाओं की, दिव्य व्यवस्थाओं की दुनिया है।

यह पृथिवी दिव्य तत्त्व के किसी ऐसे ही दृष्टा, धर्म के मर्म का साक्षात् कर रहे ऋषि की प्रतीक्षा कर रही है। रुंधे हुए गले से पुकार पुकार कर आह्वान कर रही है।

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत।।

ऋग्वेद ८/६९/८; अथर्व० २०/९२/५

उपासना करो! विशेष रूप से उपासना करो! हे ज्ञान के प्रेमियो! उसकी उपासना करो। तुम्हारे बच्चे भी उसकी उपासना करें। अभेद्य नगर या किले के तुल्य उस परमात्मा की उपासना करो।

चाणक्य-नीति

तृतीयोऽध्यायः (गतांक से आगे)

दर्शनध्यानसंस्पर्शैर्मत्स्यी कूर्मी च पक्षिणी।
शिशुं पालयते नित्यं तथा सज्जन संगतिः।।३।।

सज्जनों की संगति से सदा कल्याण होता है। सत्संगति जीवन देती है। मछली, कछुवी और पक्षिणी अपनी संतान का पालन देखने, ध्यान करने और संस्पर्श से करती हैं। सत्संगति में ये तीनों लाभ एक साथ प्राप्त होते हैं।

यावत्स्वस्थो ह्ययं देहो यावन्मृत्युश्च दूरतः।
तावदात्महितं कुर्यात् प्राणान्ते किम् करिष्यति।।४।।

जब तक शरीर स्वस्थ है और मृत्यु दूर है तभी तक आत्मकल्याण का कार्य कर लेना चाहिए। देखते देखते प्राणान्त हो जाएगा। फिर कुछ नहीं हो पायगा।

कामधेनु गुणाः विद्या ह्ययकाले फलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्।।५।।

विद्या कामधेनु के समान हर आवश्यकता के समय सुख फल रूपी दूध देने वाली है। प्रवास काल में यह माता के समान है। विद्या गुप्त धन है जिसके द्वारा सभी सुख प्राप्त किये जा सकते हैं।

तृतीयोऽध्यायः

मूर्खाः यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसंचितम्।
दम्प्त्योः कलहो नास्ति तत्र श्री स्वयमागता।।२१।।

जहां मूर्खजनों की पूजा नहीं होती, जहां अन्नादि का समुचित भण्डार होता है, जहां पति पत्नी में कलह नहीं होता; वहां श्री सम्पत्ति की कभी कोई कमी नहीं रहती।।

चतुर्थोऽध्यायः

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च।
पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।।१।।

आयु अर्थात् योनि, कर्म, भोगों के साधन, विद्या और मृत्यु- ये पांच चीजें प्राणी की जन्म से पूर्व ही नियत हो जाती हैं। (तुलना कीजिये- सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः। योगदर्शन)

साधुभ्यस्तेनिवर्तन्ते पुत्राः मित्राणि बान्धवाः।
ये च तै सह गन्तारस्तद्धर्मात्सुकृतं कुलम्।।२।।

बहुत से पुत्र, मित्र और बंधु; साधु-सज्जन संबंधियों और परिजनों से संबंध तोड़ लेते हैं। लेकिन जो उनसे निरन्तर प्रेरणा लेते रहते हैं और उनके सान्निध्य में प्रसन्न रहते हैं, उस कुल में धर्म का पालन होता है और वह कुल धन्य हो जाता है।

अमृत वचनावली

प्रीतिशतकम्

❑डॉ० रामभक्त लांगायन आई ए एस (सेवानिवृत्त)

यस्तु पश्यति सर्वत्र लीलानाट्यं चिदात्मनः।
कारुण्यं निरहंकारस्तस्य स्वाभाविकं मतम्।।४८।।

जो व्यक्ति हर वस्तु में परमात्मा की कारीगरी व रंग देखता है, तब उसमें करुणा, निरहंकारता की भावना स्वतः पैदा हो जाती है।

यथाऽमेध्यगतं हीरं गुणैर्न परिहीयते।
तथा सत्पुरुषो हीनो धनैर्न परिभूयते।।४९

जिस प्रकार हीरे के अपवित्र स्थान पर गिरने से उसकी गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आती; उसी प्रकार सत्पुरुष के गरीब होने से उसकी गरिमा में कोई कमी नहीं आती।

कार्कश्यमपनीयासौ मृत्तिकाया यथा घटम्।
कुम्भकारो यथा शिष्यनिर्माणेऽपि गुरुस्तथा।।५०।।

जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी का बर्तन घड़ते समय उसमें पड़े हुए छोटे-छोटे कंकड़ों को निकालकर उसे सुन्दर बना देता है, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य में पड़े मद, मोह को दूर करके उसे निर्मल बना देता है।

नूनं सर्व परित्यागो प्रेममार्गे हितप्रदः।
ईषत् संकोचमात्रेण न प्रेम फलमश्नुते।।५१।।

प्रेम के मार्ग पर सब कुछ खोया जा सकता है। सब कुछ छोड़ने वाले को ही सब कुछ मिलता है। रत्तीभर भी बचाया हुआ लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा बन जाता है।

सुवर्णभूतं यद् दत्तं संग्रहो मृत्तिकायते।
संग्रहस्तु विनाशार्थं दानं तिष्ठति सर्वदा।।५२।।

जितना हम देते हैं, उतना ही सोना हो जाता है और जितना हम रोक देते हैं उतना ही मिट्टी हो जाता है। जो जितना रोकेगा उतना मिट्टी होता जाएगा और जो जितना देगा उतना स्वर्णमय होता चला जाएगा।

ईश्वरे प्रेम यद्यस्ति तदा तत्सदृशो भव
सार्थकं प्रेम यद्यस्ति तन्मयत्वं हि लक्षणम्।।५३।।

प्रेम तभी अच्छा लगता है जब जिससे प्रेम करे वैसा ही बन जाए। इसी प्रकार यदि तुम परमात्मा से प्यार करना चाहते हो तो गुणों में परमात्मा-तुल्य बनकर ही उससे प्रेम कर सकते हो।

मानव संस्कृति के मर्यादापुरुषोत्तम : श्रीराम

श्रीराम के आदर्शों को आचरण में लाकर हम अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता, अखण्डता, सार्वभौमिकता तथा स्वायत्तता की रक्षा कर सकते हैं।

राम और कृष्ण मानवीय संस्कृति के आदर्श पुरुष हैं। कुछ बन्धुओं के मन में अभी भी यह धारणा है कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज राम और कृष्ण को मान्यता नहीं देता है।

प्रत्येक आर्य अपनी दाहिनी भुजा ऊँची उठाकर साहसपूर्वक यह घोषणा करता है कि आर्यसमाज राम-कृष्ण को जितना जानता और मानता है, उतना संसार का कोई भी आस्तिक नहीं मानता। कुछ लोग जितना जानते हैं, उतना मानते नहीं और कुछ विवेकी-बंधु उन्हें भली प्रकार जानते भी हैं, उतना ही मानते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के संबंध में महर्षि दयानन्द ने लिखा है-

प्रश्न-रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेद-विरुद्ध होती तो रामचन्द्र मूर्ति स्थापना क्यों करते और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर- रामचन्द्र के समय में उस लिङ्ग वा मन्दिर का नाम निशान भी न था किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ 'राम' नामक राजा ने मंदिर बनवा, लिङ्ग का नाम 'रामेश्वर' धर दिया है। जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे, तब सीताजी से कहा है कि-

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतु बंध इति विख्यातम्।।

वा० रा०, लंका काण्ड (देखिये- युद्ध काण्ड, सर्ग १२३, श्लोक २०-२१)

'हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना-ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु (व्यापक) देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहाँ प्राप्त हुई। और देख! यह सेतु हमने बाँधकर लंका में आ के, उस रावण को मार, तुझको ले आये।' इसके सिवाय वहाँ वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।

द्रष्टव्य- *सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लासः, पृष्ठ-३०३*

इस प्रकार उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भगवान राम स्वयं परमात्मा के परमभक्त थे। उन्होंने ही यह सेतु बनवाया था। सेतु का परिमाप अर्थात् रामसेतु की लम्बाई-चौड़ाई को लेकर भारतीय धर्मशास्त्रों में दिए गए तथ्य इस प्रकार हैं-

दस योजनम् विस्तीर्णम् शतयोजन-मायतम्' -वा०रा० २२/७६

अर्थात् राम-सेतु १०० योजन लम्बा और १० योजन चौड़ा था।

शास्त्रीय साक्ष्यों के अनुसार इस विस्तृत सेतु का निर्माण शिल्प कला विशेषज्ञ विश्वकर्मा के पुत्र नल ने पौष कृष्ण दशमी से चतुर्दशी तिथि तक मात्र पाँच दिन में किया था। सेतु समुद्र का भौगोलिक विस्तार भारतस्थित धनुष्कोटि से लंका स्थित सुमेरू पर्वत तक है। महाबलशाली सेतु निर्माताओं द्वारा विशाल शिलाओं और पर्वतों को उखाड़कर यांत्रिक वाहनों द्वारा समुद्र तट तक ले जाने का शास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध है। भगवान श्रीराम ने प्रवर्षण गिरि (किष्किंधा) से मार्गशीर्ष अष्टमी तिथि को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र और अभिजीत मुहूर्त में लंका विजय के लिए प्रस्थान किया था।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथों में राम, कृष्ण, शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह तथा वीर बघेलों (गुजरात) का गर्वपूर्वक उल्लेख किया है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के राम राजपुत्र, पारिवारिक मर्यादाओं को मानने वाले, ऋषि मुनियों के भक्त, परम आस्तिक तथा विपत्तियों में भी न घबराने वाले महापुरुष थे। श्रीराम की मान्यता थी कि विपत्तियाँ वीरों पर ही आती हैं और वे उन पर विजय प्राप्त करते हैं। वीर पुरुष विपत्तियों पर विपत्तियों के समान टूट पड़ते हैं और विजयी होते हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश का यह दुर्भाग्य रहा कि पाश्चात्य शिक्षा, सभ्यता और संस्कारों से प्रभावित कुछ भारतीय नेताओं ने पोरस के हाथियों के समान भारतीय मानक, इतिहास और महापुरुषों के सम्बन्ध में विवेकहीनता धारण कर भ्रमित विचार प्रकट करने प्रारम्भ कर दिये। साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित व्यक्तियों के अनुसार और 'स्त्री एक सम्पत्ति है, इसमें आत्मतत्व विद्यमान नहीं है।' ऐसे अपरिपक्व मानसिकता वाले तत्व यदि राम के अस्तित्व और महिमा के संबंध में नकारात्मक विचार रखें, तो उनके मानसिक दिवालियापन की बात ही कही जाएगी--- किन्तु भारत में जन्मे, यहाँ की माटी में लोट-पोट कर बड़े

हुए तथा बार-एट लॉ की प्रतिष्ठापूर्ण उपाधिधारी जब सन्तुष्टीकरण को आधार बनाकर 'राम' को मानने से ही इंकार कर दें, राम-रावण को मन के सतोगुण-तमोगुण का संघर्ष कहने लग जाएं तो हम किसे दोषी या अपराधी कहेंगे?

अपनी समाधि पर 'हे राम!' लिखवाने वाले विश्ववंद्य गांधीजी ने राम के संबंध में 'हरिजन' के अंकों में लेख लिख कर कैसे विचार प्रकट किये, यह तो 'हरिजन' के पाठक ही जान सकते हैं। इस स्वतन्त्र राष्ट्र में अपने आप्त महापुरुषों के अस्तित्त्व पर नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वालों की बुद्धि पर दया ही आती है और कहना पड़ता है- धियो यो नः प्रचोदयात्।

महर्षि दयानन्द ने राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र राम के पौरुष तथा उनके गुणों का विचारणीय एवं महत्वपूर्ण वर्णन किया है। महर्षि दयानन्द ने राम को महामानव, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ आत्मा, परमात्मा का परम भक्त, धीर-वीर पुरुष, विजय के पश्चात् भी विनम्रता आदि गुणों से विभूषित बताया है। महर्षि दयानन्द का राम एक ऐसा महानायक था, जिसने सद्गृहस्थ रहते हुए तपस्या द्वारा मोक्ष के मार्ग को अपनाया था।

राम और कृष्ण; दोनों ही सद्गृहस्थ तथा आदर्श महापुरुष थे। आज राष्ट्र को ऐसे ही आदर्श महापुरुषों की आवश्यकता है, जिनके आदर्शों को आचरण में लाकर हम अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता, अखण्डता, सार्वभौमिकता तथा स्वायत्तता की रक्षा कर सकते हैं।

आचरण राम के यदि न अपना सके, राम आयण के गाने से क्या फायदा?

आचरण राम के यदि न अपना सके,
राम आयण के गाने से क्या फायदा?
मीत दानव के दानव बने ही रहे,
घोटे मानस लगाने से क्या फायदा?

रामराम आयण को गाते सुनाते रहे,
दोहे चौपाइयाँ छन्द गाते रहे।
ढोल तासे नगाड़े बजाते रहे,
ताल-लय-स्वर क्रा आनन्द पाते रहे।।
बन गये रट्टू तोता क्यों रामायणी,
स्वांग मानस रचाने से क्या फायदा?

राम रावण हैं क्या कुछ भी जाना नहीं,
सीख मानस की क्या, कुछ भी माना नहीं
क्यों बने पातकी के रहे पातकी,
लक्ष्य जीवन का क्या कुछभी जाना नहीं
रावणी कारनामे न तज पा सके,
राम के जस सुनाने से क्या फायदा?

कैसा छल छद्म धोखा है पाखण्ड है,
राम झूठे बुलावे पै आते नहीं।
यह तो गुमराह करना कराना हुआ,
अपने दिल का प्रदूषण मिटाते नहीं।।
क्यों बने मीत! वंचक ही बगुलाभगत,
सबको ठगने ठगाने से क्या फायदा?

पाठ मानस करो सीख मानो नहीं,
यह अवज्ञा नहीं तो क्या सम्मान है?
सात खण्डों में तुलसी ने बांटा है क्यों,
तुम अखंडित कहो, कवि का अपमान है।
कर्म पर कस कसौटी उतारो इसे,
पाठ केवल कराने से क्या फायदा?

मीत! मानस से पायी है क्या प्रेरणा,
आज तक उसकी मानी है क्या मंत्रणा?
कम न हो पा सकी स्वार्थ की ऐषणा,
बोलो अब क्या बनी आपकी धारणा?
रात बीती है, जागो सवेरा हुआ,
सूखी गंगा नहाने से क्या फायदा?

राम आयण मनुज धर्म सद्ग्रंथ है,
नर बने देवता तो महा सार है।
तुम पढ़ो तो पढ़ो तत्त्व चिंतन करो,
ज्ञानमय कर्म का भव्य भण्डार है।।
मन के मंदिर को पावन प्रकाशित करो,
दम्भ नाटक रचाने से क्या फायदा?

वेद कहते हैं क्या, जो कहो सो करो,
सत्यपथ पर चलो उनका उपदेश है।
पंच याज्ञिक तथा तत्त्व ज्ञानी बनो,
राम आयण का भी लक्ष्य-संदेश है।।
जिन्दगी यदि अवैदिक बनी रह गयी,
मीठी तानें सुनाने से क्या फायदा?

ओम् रमता है घट-घट में सर्वत्र है,
चन्द्र बन करके भूतल पै आता नहीं।
दिल की आँखों में विमलेश मिलता है सच,
बाहरी चक्षुओं से दिखाता नहीं।
ब्रह्म के बोध बिन व्यर्थ मानस विफल,
अर्थ जाने तो, माने से है फायदा?

❑राधेश्याम जोशी 'विमलेश'
प्राचार्य पू०मा०वि०छावन, जिला-हरदोई (उ०प्र०)

क्यों नहीं हुई २०२१ में प्रलय!

कितनी है इस सृष्टि की आयु!

❑रामफल सिंह आर्य, ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)
चलभाष ०९४१८२-७७७१४

वर्षों से एक घोषणा बड़े बलपूर्वक की जा रही थी कि २१ दिसम्बर २०१२ को प्रलय आयेगी और यह सारा संसार समाप्त हो जायेगा। वर्ष २०१२ के प्रारम्भ में भी 'मोबाईल' आदि से किसी ने यह प्रचारित कर दिया था कि आज रात को ही सब कुछ समाप्त हो जायेगा। इसके परिणामस्वरूप दिल्ली एवं कानपुर आदि समेत अन्य कई नगरों में लोगों ने भंयकर सर्दी की रात बाहर खुले में बैठ कर व्यतीत की। इस प्रकार की घोषणायें/ भविष्यवाणियां पहले भी बहुत होती रही हैं परन्तु वे भी खोखली सिद्ध हुईं। फिर भी दूरदर्शन एवं इन्टरनैट के माध्यम से इस बार की भविष्यवाणी का पर्याप्त प्रचार हो चुका था और कई देशों में लोगों ने इसके लिये पूरी तैयारी की हुई थी। अनेक स्थानों पर- मैक्सिको आदि में, कई लोगों ने अपना सब कुछ दान कर दिया और स्वयं कंगाल हो गये। 'हॉलीवुड' ने तो एक फिल्म ही २०१२ बना डाली। उसने भी लोगों को कई प्रकार से इस बारे में प्रभावित किया।

यह भविष्यवाणी वास्तव में Mayan (माया) कैलेन्डर के आधार पर (Meso-american long count calendar) के आधार पर की गई थी जिसमें १३वें ब' अक' अतुन् (b'k'atun) जो कि Meso-american calendar की समाप्ति की समयावधि है। उसके अनुसार प्रलय होने पर एक नये पांचवें संसार का प्रारम्भ होना था। (पहले तीन संसार समाप्त हो चुके हैं, चौथे में हम रह रहे हैं) मायान सभ्यता का मुख्य केन्द्र Mexeco, Guatemala, Honduras तथा El-Salvado थे और इसका समय ईसा के २५० से ९०० वर्ष पश्चात् तक माना जाता है। इस कैलेन्डर के अनुसार २०-२० दिन का एक (महीना) बनता है और एक वर्ष में १८ महीने होते हैं। ३६० दिन के एक वर्ष को एक तुन् (tun) कहा जाता है और २० तुन् का एक क्-अतुन् (K'atun) होता है तथा २० k'atun का एक ब् 'अक्' अतुन् (b'k'atun) होता है। इस प्रकार १,४४,००० दिन का (लगभग ३९४ वर्ष) एक b'k' atun बनता है।

इन्हीं के एक ग्रन्थ 'पोपोल वुह' (Popol vuh) जो कि K'iehe (के आईस) माया द्वारा संकलित सृष्टि रचनाओं की एक गणना है, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, हम चौथी दुनिया में रह रहे हैं। ईश्वर द्वारा रचित पहले की तीन रचनायें (सृष्टि) समाप्त हो चुकी हैं। १३ ब' अक् अतुन् में एक सृष्टि समाप्त हो जाती है, जिसका समय लगभग ५१२५ वर्ष बनता है। तीसरे संसार सृष्टि रचना की समाप्ति ११ अगस्त, ३११४ ईसापूर्व हुई थी और उसी कैलेण्डर के अनुसार अब वर्ष, २०१२ में २१ दिसम्बर को प्रातः ७ बजकर, २६ मिनट और ४८ सैंकेड पर यह संसार (चौथा संसार) समाप्त होना निश्चित था। मायान कैलेण्डर के अनुसार इसकी समाप्ति का समय अर्थात् १३ वे ब' अक्' अतुन् की समाप्ति पर २१-१२-२०१२ को १३-०-०-०-० पर था, जो वर्तमान गणना के अनुसार ७-२६-४८ था।

यह है उस भ्रामक विचार (अफवाह) का मूल! जो कि पूरे विश्व में फैला दिया गया था और भारत में भी लोग इससे भयभीत थे। वैसे तो यह सारा वर्णन ही भ्रामक मस्तिष्क की भ्रामक उपज एवं हास्यास्पद है और बिना इसकी वास्तविकता जाने आज के शिक्षित कहे जाने वाले इसके चक्कर में थे। अत्यन्त खेद है कि जब मानव दूसरे ग्रहों की यात्रा कर रहा है और विज्ञान इतना उन्नत है तो इस समय भी लोग ऐसी भ्रांतियों में पड़ रहे हैं। इसका मुख्य कारण है 'सत्य विद्या के प्रचार का अभाव।' हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि ईश्वर ने यह सृष्टि एक विशेष विज्ञान के अन्तर्गत रची है और इसके बहुत से उद्देश्य हैं। परन्तु इसका मुख्य उद्देश्य है- सभी आत्माओं द्वारा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की सिद्धि। यतः ये उद्देश्य बहुत बड़े हैं, श्रमसाध्य एवं समयसाध्य हैं; और एक पीढ़ी के पश्चात् दूसरी पीढ़ी तक चलने वाले हैं, अतः सृष्टि की आयु भी बहुत बड़ी है।

यह तथ्य भी स्मरण रखना चाहिये कि इस सृष्टि में कुछ भी निष्प्रयोजन नहीं है। प्रत्येक प्राणी एवं पदार्थ का अपना-अपना महत्त्व है। जब हम दार्शनिक एवं वैज्ञानिक रीति से उन पर विचार करते हैं तो उनकी रचना एवं महत्त्व के साथ-२ उनकी जटिलता पर भी आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। सृष्टि रचना इतनी विचित्र, इतनी अद्‌भुत

है कि बड़े वैज्ञानिक भी इसकी कोई थाह नहीं पा सकते। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में वेदोत्पत्ति विषय में मनुस्मृति एवं सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थों के आधार पर इस विषय में बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। इसमें उन्होंने सृष्टि की आयु ४,३२,००,००,००० वर्ष लिखी है। इस समय इसका १,९६,०८,५३,११४ वां वर्ष चल रहा है। इस प्रकार से अभी तक इस सृष्टि की आधी आयु भी पूरी नहीं हुई है। यदि मात्र ५१२५ वर्ष में ही ईश्वर सृष्टि बदलने लग जाये तो इसमें एक नहीं अनेकों दोष उत्पन्न हो जायेंगे। वैज्ञानिकों द्वारा जो अन्वेषण किया गया है उसके अनुसार लाखों वर्ष तो पृथ्वी को ठण्डा होने में ही लग गये, फिर वनस्पतियों एवं पशु-पक्षियों की रचना में कितना समय लगा! अब ५१२५ वर्ष में क्या-२ और कैसे हो पायेगा यह तो इस कैलेण्डर को बनाने वाला ही बता सकता है। एक और भी समस्या है कि ५१२५ वर्ष के उपरान्त प्रलय तो लिख दिया, परन्तु यह नहीं लिखा कि पुनः सृष्टि भला कैसे उत्पन्न होगी और उसमें कितना समय लगेगा? धन्य हो कैलेन्डर बनाने वाले! तुम्हारी बुद्धि के क्या कहने!

अब आर्यों की काल गणना का अति संक्षिप्त सा विवरण हम नीचे दे रहे हैं। अवलोकन कीजिये:-

- चार युगों= सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलयुग के समूह को एक चतुर्युगी कहते हैं।
- ऐसी ७१ चतुर्युगियों से एक मन्वन्तर बनता है और ऐसे १४ मन्वन्तरों का एक कल्प अथवा सृष्टि की आयु बनती है। प्रत्येक मन्वन्तर के मध्य एक सन्धि होती है, जिसका समय पृथक् से जोड़ा जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक युग की भी एक सन्धि होती है। इसमें पूर्व संधिकाल को संध्या एवं उत्तर संधिकाल को संध्यांश कहते हैं। यह विवरण निम्न तालिका में दिया जाता है:-

(१)	४०००	दिव्यवर्ष x ३६०=१४,४०,०००	मानव वर्ष	सतयुग का प्रमुख काल परिमाण
	४००	दिव्यवर्ष x ३६०=१,४४,०००	मानव वर्ष	सतयुग का संध्याकाल
	४००	दिव्यवर्ष x ३६०=१,४४,०००	मानव वर्ष	सतयुग का संध्यांश काल
	४८००	दिव्यवर्ष x ३६०=१७,२८,०००	मानव वर्ष	सतयुग का पूर्ण काल परिमाण
(२)	३०००	दिव्यवर्ष x ३६०=१०,८०,०००	मानव वर्ष	त्रेता का प्रमुख काल परिमाण
	३००	दिव्यवर्ष x ३६०=१,०८,०००	मानव वर्ष	त्रेता का संध्याकाल
	३००	दिव्यवर्ष x ३६०=१,०८,०००	मानव वर्ष	त्रेता का संध्यांश काल
	३६००	दिव्यवर्ष x ३६०=१२,९६,०००	मानव वर्ष	त्रेता का पूर्णकाल परिमाण
(३)	२०००	दिव्यवर्ष x ३६०=७,२०,०००	मानव वर्ष	द्वापर का प्रमुख काल परिमाण
	२००	दिव्यवर्ष x ३६०=७२,०००	मानव वर्ष	द्वापर का संध्या काल
	२००	दिव्यवर्ष x ३६०=७२,०००	मानव वर्ष	द्वापर का संध्यांश काल
	२४००	दिव्यवर्ष x ३६०=८,६४,०००	मानव वर्ष	द्वापर का पूर्ण काल परिमाण
(४)	१०००	दिव्यवर्ष x ३६०=३,६०,०००	मानव वर्ष	कलियुग का प्रमुख काल परिमाण
	१००	दिव्यवर्ष x ३६०=३६,०००	मानव वर्ष	कलियुग का संध्या काल
	१००	दिव्यवर्ष x ३६०=३६,०००	मानव वर्ष	कलियुग का संध्यांश काल
	१२००	दिव्यवर्ष x ३६०=४,३२,०००	मानव वर्ष	कलियुग का पूर्ण काल परिमाण

४८००+३६००+२४००+१२००=१२००० दिव्यवर्ष x ३६० =४३,२०,००० मानववर्ष=एक चतुर्युगी

१२००० दिव्यवर्ष x ७१ x ३६०= ३०,६७,२०,००० मानव वर्ष = एक मन्वन्तर का समय

१,२०,००,००० x ३६०= ४,३२,००,००,००० मानव वर्ष = सृष्टि की समयावधि (१००० दिव्ययुग)

इतना ही नहीं अपितु इस कालगणना से पूर्व सूक्ष्म समय की भी गणना की गई है। उसका भी अवलाकन करें:-

एक पलक गिरने का समय =१ निमेष	८/४५ सेकेंड	१८ निमेष=१ काष्ठा	३ सेकेंड
३० काष्ठा=१ कला	१ मिनट ३६ सेकेंड	३० कला=१ मूहूर्त्त	४८ मिनट या २ घड़ी
३० मूहूर्त्त=१ दिन रत	२४ घण्टे या ६० घड़ी	१५ दिन रात=१ मानव पक्ष	
२ पक्ष= १ मानव मास		६ मास =१ अयन	
२ अयन=१२ मास =१ मानव वर्ष			

(विशुद्ध मनुस्मृति पृ० ५२ एवं ५३)

प्रिय पाठकगण! यह है वैदिक लोगों की काल गणना जो आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी खरी उतरती है। कई लोग इसमें यह शंका करते हैं कि आपके पास क्या प्रमाण हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति के इतने वर्ष हो चुके हैं? इसका उत्तर भी महर्षि दयानन्द जी महाराज ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में दे दिया है। वे लिखते हैं– आर्य लोग नित्य प्रति ओं तत् सत्, परमेश्वर के इन तीन नामों का प्रथम उच्चारण करके कार्यों को आरम्भ और परमेश्वर का ही नित्य धन्यवाद करते चले आते हैं कि आनन्द में आज पर्यन्त परमेश्वर की सृष्टि और हम लोग बने हुए हैं और वही खाते की नाईं लिखते लिखाते, पढ़ते पढ़ाते चले आये हैं— जैसे बही खाते में मिति डालते हैं, वैसे ही महीना और वर्ष बढ़ाते घटाते चलते हैं। इसी प्रकार आर्यलोग तिथिपत्र में भी वर्ष, मास और दिन आदि लिखते चले आते हैं। (ऋग्वेदादि भाष्य भू० वेदोत्पत्ति विषय)

इस प्रकार से यह सारा हिसाब किताब रखा जाता है। हम आर्य लोग आज भी प्रतिदिन यज्ञ करते समय संकल्पपाठ करते हैं जिसमें अद्यतन दिन, पक्ष, मास, ऋतु, वर्ष एवं अयन आदि के साथ–२ उपर्युक्त कुल समय का वाचन स्मृत्यर्थ किया जाता है कि जिससे हमारी गणना सुरक्षित रहे। इन प्रबल साक्षियों की विद्यमानता में यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि हम अपना ज्ञान, विज्ञान, प्राचीन इतिहास, गौरव एवं सर्वपरीक्षित सिद्धान्त भूलकर कुछ तथाकथित घोषणाओं एवं झूठी भविष्यवाणियों आदि पर विश्वास करके अनेकविध दु:ख उठाते हैं।

यह भी स्मरण रखना चाहिये कि किसी समय किसी देश मे आये किसी तूफान, बवंडर या भूकम्प आदि के कारण हुई क्षति को प्रलय की संज्ञा नहीं दी जा सकती। हां, इसे प्राकृतिक आपदा तो कह सकते हैं परन्तु प्रलय नहीं। प्रलय शब्द तो स्वयं में ही सब कुछ कह रहा है– प्र=पूर्णरूपेण (Completly) लय। अपने मूल कारण में लीन हो जाना अर्थात् परमाणुओं का परस्पर सम्बन्ध टूट कर उनका बिखर जाना और अपने स्वरूप में भी न रहना। इसमें मात्र मनुष्य एवं पशु–पक्षियों का नष्ट हो जाना ही सम्मिलित नहीं है, अपितु सभी दृश्यमान् जगत् पृथ्वी से लेकर सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह आदि समेत पूर्ण रूपेण सबका ही विनाश हो जाना। प्रकृति का अपनी मूल अवस्था में चले जाना। उस समय न तो कोई तत्त्व अपने रूप में विद्यमान होते हैं और न ही कुछ जानने योग्य होता है। वेद के शब्दों में–

तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।।

–ऋग्वेद १०/१२९/३

अर्थात् यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत, रात्रीरूप में, जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के एकदेशी आच्छादित था, पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप से कार्यरूप कर दिया। और भी देखिये:–

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्।।

ऋग्वेद १०/१२९/१

अर्थात् जब यह कार्य सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी तब एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर और दूसरा जगत् का कारण अर्थात् जगत् बनाने की सामग्री विद्यमान थी। उस समय (असत्) शून्य नाम आकाश अर्थात् जो नेत्रों से देखने में नही आता सो भी नहीं था, क्योंकि उस समय उसका व्यवहार नहीं था। (नासीद्रजः) उस समय परमाणु भी नही थे तथा (नो व्योमा०) विराट् अर्थात् जो सब स्थूल जगत् के निवास का स्थान है, सो भी नहीं था (किमाव०) जो यह वर्तमान जगत् है वह भी शुद्ध ब्रह्म को ढक नहीं सकता, जैसे कोहरा का जल पृथ्वी को नहीं ढक सकता। उस जल से नदी में प्रवाह नहीं चलता और न कभी वह गहरा और उथला हो सकता है। (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका)

पाठकगण! यह है प्रलय की अवस्था! बेचारे भविष्यवाणियँ करने वाले पता नहीं किस अन्धकार में पड़े हैं। हम लोग आज भी इस बात को पूर्णरूपेण नहीं समझ पाये हैं कि जो कुछ पश्चिमी विचारधारा से आयातित है वह सब कुछ सत्य एवं अनुकरणीय नहीं है। चाहे कोई भी व्यवहार हो, वेशभूषा हो, जीवनशैली हो या खान पान हो, पश्चिम की पुड़िया में लिपटकर आता है, हम उसे स्वीकार करने में अपने को धन्य मानते हैं। एक अन्धे के पीछे दूसरे अन्धे की भाँति एक भंयकर महाखाई में गिरते जाकर भी गौरवान्वित अनुभव करते हैं। हाय रे दुर्भाग्य! पतन भला किसी और का भी नाम होता है?

प्राचीन वैदिक लोगों ने सृष्टि रचना को बड़ी सूक्ष्मता से जाना और सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर प्रलय तक का वर्णन वेदों के आधार पर अपने ग्रन्थों में किया। उनकी कालगणना इतनी सटीक और दोषरहित है, इतनी वैज्ञानिकता से परिपूर्ण एवं तर्कयुक्त है कि उसमें कहीं भी कोई न्यूनता नहीं है। हमें उपर्युक्त व्यर्थ की भविष्यवाणियों के चक्कर में न पड़ करके सदैव पूर्ण पुरुषार्थ युक्त कर्मों के द्वारा यज्ञ, योग, स्वाध्याय, तप एवं धर्मानुष्ठान करके निज जीवन को उन्नत बनाना चाहिये। अपने प्राचीन आर्ष साहित्य का निरन्तर पठन–पाठन करके सदैव सत्य के ही प्रचार में संलग्न रहना चाहिये और अपनी सन्तानों में भी सद्गुणों का आधान करना चाहिये।

प्रेम करने वालो प्रेम करना सीखो तो सही

❑ राजेशार्य आट्टा, ११६६, कच्चा किला, साढौरा (यमुनानगर) १३३२०४

केवल शरीर की सुन्दरता के जाल में फँसकर अमर्यादित व असंयमी बने अज्ञानी क्या जानें कि राष्ट्र-प्रेम जैसा कोई दिव्य प्रेम भी होता है, जिसे पाकर आदमी इतिहास में चिरस्मरणीय स्थान बना लेता है।

प्रिय पाठकवृन्द! आर्यों के प्राचीन इतिहास में भगवान राम ने चौदह वर्ष वनवास में बिताये। पाण्डवों ने भी तेरह वर्ष का निर्वासन झेला, पर भारत माता की पराधीनता की बेड़ियाँ काटने के लिए कितने ही दिलजले दीवानों ने अपने जीवन का लगभग आधा हिस्सा प्रवास में ही बिता दिया। उनमें से कई पुनः स्वदेश भी नहीं लौट पाये और वहीं से अमर पथ के पथिक बन गये। उनके इस व्रत में साथ निभाने वालों का बलिदान भी कम नहीं है। हम उनके बलिदान के प्रति कृतज्ञ होने और अपने अन्दर उसी त्याग भावना को जगाने के लिए उनका पावन स्मरण करते हैं।

और उसने विवाह नहीं किया।

'अलीपुर षड़यन्त्र' (१९०८ ई०) में बन्दी बनाये बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी उल्लासकर दत्त की फाँसी की सजा आजीवन कालापानी कारावास में बदल दी गई। १९०९ में इन्हें कालापानी भेजा गया। वहाँ के अमानवीय अत्याचारों से ये पागल हो गये। दस वर्ष तक ये पागलों की दयनीय स्थिति में रहे। अण्डमान के बाद (१९२० ई०) इन्हें मद्रास के पागलों के अस्पताल में रखा गया। शचीन्द्रनाथ सान्याल ने 'बन्दी जीवन' में लिखा है :-"प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता स्व० विपिनचन्द्र (पाल) की एक कन्या के साथ उनका प्रणय हो गया था और विवाह की बात स्थिर हो चुकी थी, परन्तु इस बीच में अलीपुर षड्यंत्र के मामले में उल्लासकर गिरफ्तार हो गये और उन्हें सजा हो गई। विपिनपाल की लड़की ने आज तक (१९३८ ई०) शादी नहीं की। जब तक उल्लासकर जेल में थे, तब तक तो कोई बात ही नहीं थी। जेल में उल्लासकर का मस्तिष्क विकृत हो गया है, यह जानकर तब उसने शादी न करना ही उचित समझा। जहाँ तक मुझे मालूम है, उस लड़की ने फिर शादी नहीं की।"

राजा महेन्द्रप्रताप की बेटी

तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन कर विदेशों की सहायता से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए उदारमना क्रांतिवीर राजा महेन्द्रप्रताप १९१५ ई० में मातृभूमि को छोड़कर चल पड़े और अपने लक्ष्य की सफलता के लिए रूस, अमेरिका, चीन, जापान आदि विभिन्न देशों में घूमते रहे। बहुत लम्बे समय के बाद १९४५ ई० में भारत-भूमि के दर्शन किये। इनकी पुत्री भक्ति देवी ने व्रत लिया था कि अपने पिता के वापिस भारत आने पर ही वह शादी करेगी, पर जब पिताजी आये तो उसकी आयु काफी हो चुकी थी। फिर वह आजीवन अविवाहित ही रही।

चाची के आंसू

भगतसिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह माण्डले जेल से आने के बाद १९०९ ई० में स्वतंत्रता देवी को मनाने के लिए निकल पड़े और बलिदान मंत्र का जप करते हुए विभिन्न देशों में घूमते रहे। घर में भगतसिंह की चाची हरनाम कौर इनकी प्रतीक्षा करते-करते अपने आँचल को आँसुओं से भिगोती रही। ये आँसू ही नन्हें भगत को अंग्रेजों से लड़कर चाचा को वापिस लाने की प्रेरणा देते थे। आखिर इस सावित्री की साधना पूर्ण हुई और लगभग ४० साल बाद १९४७ को सरदार अजीत सिंह ने मातृभूमि पर कदम रखा। कुछ महीने बाद १५ अगस्त १९४७ की सुबह अपनी सती साध्वी पतिव्रता देवी का धन्यवाद कर महाप्रयाण कर गये। पाठक! इस बलिदान का कोई मोल चुका सकता है?

सती साध्वी रामरखी

गुरु तेगबहादुर के साथ बलिदान देने वाले भाई मतिदास के वंश में पैदा हुए भाई परमानन्द के चचेरे भाई बालमुकुन्द लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने के आरोप में गिरफ्तार किये गये। १५ अक्तूबर १९१३ को इन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई। मात्र एक वर्ष पूर्व ही सती साध्वी रामरखी से इनका विवाह हुआ था। पति के गिरफ्तार किए जाने पर उस देवी ने चारपाई पर पैर नहीं रखा। फाँसी की सजा होने पर वे उनसे मिलने जेल गई। पता चला कि उनको कंकड-मिट्टी मिली रोटी मिलती है, फर्श पर ही सोना पड़ता है। मई की गर्मी और तूफानी मच्छरों का आक्रमण भी झेलना पड़ता है। वह कोमल युवती घर आकर उसी प्रकार का भोजन खाने लगी। जमीन पर ऊनी कम्बल बिछाकर सबसे निचली कोठरी में घुस गई। मच्छर सताने लगे। लोगों ने उसे बहुत समझाया पर वह कहती- 'वे भी तो जेल में ऐसे ही रहते हैं।'

११ मई १९१४ को सती रामरखी ने सुना कि आज

व अमर पथ के पथिक बन गये। बस, उसी दिन से उसने भोजन त्याग दिया। अन्न-जल ग्रहण किये बिना सतरह दिन बीत गये। अठारहवें दिन स्वयं स्नान कर वस्त्राभूषण पहने और अपने कमरे में समाधि लगाकर बैठ गई। कुछ देर बाद लोगो ने देखा कि पंछी उड़ चुका था। मानसरोवर का हंस प्रियतम से मिल चुका था। शचीन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा है-"ऐसे पति-प्रेम और आत्मोत्सर्ग की तुलना है कहीं? इस घटना का स्मरण होते ही देह और मन पुलकित होकर कण्टकित हो जाता है! बालमुकुन्द की गृहिणी! तुम धन्य हो। ऐसी पत्नी के बिना क्या ऐसा पति हो सकता है! हाय रे भारत के नसीब, ऐसी पत्नी और ऐसे पति का बना रहना भी तेरे भाग्य में न था!"

हुतात्मा शुक्रराज की संगिनी

ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से प्रेरणा पाकर नेपाल के पं० माधवराव जोशी ने नेपाल की धरती पर बलि, श्रद्धा, सती-प्रथा, बाल-विवाह आदि का खण्डन किया तो नेपाल के राणा चन्द्रसमशेर ने उन्हें जेल में डाल दिया। अवसर पाकर एक दिन वे परिवार सहित नेपाल से भाग निकले। भारत आकर अपने तीनों पुत्रों को गुरुकुल सिकन्दराबाद (उ० प्र०) में पढ़ाया। शुक्रराज ने १९१५ ई० में लाहौर से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की और पुनः नेपाल जाकर वैदिक धर्म का डंका बजाने लगे। नेपाल के महाराजा युद्ध समशेर पर उनका प्रभाव होने लगा; तो धूर्त स्वार्थी मांसाहारी मूर्ति-पूजकों ने महाराजा को बहलाकर पं० शुक्रराज शास्त्री को कैद में डलवा दिया। जिस समय ये जेल में थे, तो इनकी धर्मपत्नी मेनका ने एक पुत्री को जन्म दिया और पति के दर्शन करने की प्रार्थना की। पर निर्दयी सरकार ने इसकी अनुमति नहीं दी। पति के वियोग को न सहकर उस देवी ने प्राण त्याग दिये। माँ से बिछुड़ी बच्ची भी तड़प-तड़पकर मर गई। राजद्रोह का आरोप लगाकर शास्त्री जी को मृत्यु दण्ड सुना दिया गया। यह सुनकर इनके पिता ने ऊँची आवाज में कहा-"बेटा, तुमने कोई पाप नहीं किया है। तुम धर्म के लिए बलिदान हो रहे हो, यह मेरे और तुम्हारे लिए गौरव की बात है।"

राष्ट्र धर्म की रक्षा करते हुए पं० शुक्रराज शास्त्री ने अपना बलिदान दिया। दिन-भर भूखा रखकर रात्रि के १२ बजे बागमती नदी के किनारे जंगल में ले जाकर उन्हें फाँसी दे दी गई। यह वैदिक ज्योति इन हुतात्माओं के रक्त से ही प्रज्वलित होती रही है।

द्वार खोलकर ऊँचे स्वर से, बोला कातिल मतवाला।
वो ही आये देश धर्म की, जिसे जलाती हो ज्वाला।।
सुरा सुराही शीशा सागिर, सुरबाला का नाम नहीं।
बिना पीये ही अविकल जग को, 'विकल' बनाती वधशाला।।

भिकाई (भीखा) जी कामा

प्रिय पाठकवृन्द! मातृभूमि की पराधीनता की बेड़ियाँ काटने के लिए जैसे हमारे देशभक्त वीरों ने विदेशों की खाक छानी, उसी प्रकार हमारी बीरांगनाओं ने भी विदेश में रहने वाले भारतीयों में क्रांति की ज्वाला भड़काते हुए अपना यौवन बिता दिया। मुम्बई के पारसी परिवार में पैदा हुई (१८६१ ई०) मैडम भिकाई (भीखा) जी कामा १९०५ ई० से इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, जर्मनी आदि देशों में क्रांति का प्रचार करती रही। श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, सरदार सिंह राणा आदि के साथ मिलकर भारत की स्वतंत्रता का युद्ध लड़ती रही। फ्रांस में भारतीय समुदाय उन्हें "काली का अवतार" मानने लगा। पेरिस में वह "भारतीय क्रांति की जननी" के रूप में विख्यात हो गई। वीर सावरकर इन्हें माता का सम्मान देते थे। उनके काला पानी जाने के बाद उनके परिवार को ये आर्थिक सहायता पहुँचाती रहीं। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्रांस सरकार ने इन्हें ३ वर्ष के लिए पेरिस में नजरबंद रखा। वहाँ इनका स्वास्थ्य खराब हो गया और ये भारत आने के लिए छटपटाने लगीं। ब्रिटिश सरकार ने इन्हें भारत में प्रवेश की अनुमति नहीं दी। बड़ी कठिनाई से कुछ शर्तों पर अनुमति मिली और दिसम्बर १९३५ ई० में मातृभूमि का स्पर्श किया। १६ अगस्त १९३६ को यह क्रांतिज्वाला शांत हो गई।

७३ वर्ष बाद पूरी हुई अन्तिम इच्छा

महर्षि दयानन्द के वैदिक संस्कृति, स्वदेश प्रेम व क्रांतिकारी विचारधारा से प्रेरणा पाए हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा के विषय में शचीन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा है- "विप्लववादी भारतवासियों में से सबसे पहले श्यामजी कृष्ण वर्मा विदेश गए और उनके संस्पर्श से और उनकी चेष्टा से अनेक विदेशस्थ भारतीय युवक विप्लव धर्म में दीक्षित होते रहे। सन् १९०५ के दिसम्बर महीने में श्यामजी ने इस बात का विचार किया कि छः उपयुक्त भारतवासियों को छः हजार रुपया वृत्ति देंगे, जिससे वे यूरोप, अमेरिका और पृथ्वी के अन्यान्य स्थानों में घूमकर भारतवासियों को स्वाधीनता के मन्त्र में दीक्षित करने के लायक शिक्षा उपार्जन कर सकें।"

ऐसी ही एक छात्रवृत्ति लेकर वीर सावरकर श्यामजी के पास लन्दन के इण्डिया हाउस में पहुँचे, जिससे क्रांति का कार्य खूब तेजी से हुआ। वहीं मदनलाल धींगड़ा ने कर्जन वायली को गोली मारकर क्रांति की गूँज लंदन और भारत के अंग्रेजों के कानों में गुंजा दी। धींगड़ा को फाँसी (१९ अगस्त १९०९) और वीर सावरकर को बन्दी बनाए जाने के बाद श्यामजी की क्रांतिकारी गतिविधियाँ फ्रांस में शुरू हो गईं। प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने पर इन्हें पैरिस भी छोड़कर जेनेवा जाना पड़ा। १८५७ के क्रांति वर्ष में पैदा हुआ

यह क्रांतिकारी वीर ३० मार्च १९३० को मातृभूमि व सगे-सम्बन्धियों से दूर जेनेवा में अपनी सहधर्मिणी को अकेला छोड़कर महाप्रस्थान कर गया। यह क्रांति गुरु अपने जीते जी स्वदेश नहीं लौट पाया, पर इसकी अंतिम इच्छा थी कि मेरी अस्थियाँ स्वतंत्र भारत में ले जाई जायें और उस अंतिम इच्छा को ७३ वर्ष बाद पूरा किया गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने। २४ अगस्त २००३ को इस वीर दम्पति का अस्थि-कलश भारत आया, जबकि देश १७ वर्ष बाद स्वतंत्र हो चुका था। फिर भी शहीदों का सम्मान करने वालों को हत्यारा कहा जाता है, इस आजादी में।

लाला हरदयाल

जिसकी प्रखर मेधा से आश्चर्यचकित हुए अंग्रेजों ने जिसे दो-दो छात्रवृत्तियाँ देकर इंग्लैंड पढ़ने भेजा; जिसमें श्यामजी कृष्ण वर्मा और भाई परमानन्द के सान्निध्य से राष्ट्रीय भाव जगा और जिसने सरदार अजीतसिंह व लाला लाजपत राय के निर्वासन से व्यथित होकर अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति को गुलामी का चिह्न मानकर तत्काल छोड़ने का निश्चय किया तो उस क्रांतिवीर लाला हरदयाल की हिस्टीरिया की रोगी पत्नी सुन्दररानी ने कहा-"यहाँ हमारा निर्वाह कैसे होगा? परदेश में हम किसका सहारा ले सकते हैं।" तो बड़ी निडरता से वे बोले-"हम अंग्रेजों से सहायता लेने वाले नहीं। उनके हाथ तो खून से सने हुए हैं। इन्होंने हमारे निर्दोष राष्ट्र का खून कर रखा है। डाकुओं से हम कैसे रुपया ले सकते हैं और फिर पाप का रुपया।"

भारत लौटकर पत्नी को पटियाला छोड़कर और उनसे देश-सेवा की अनुमति लेकर पुनः परिवार का मुँह नहीं देखा। पहले देश में क्रांति का प्रचार करने लगे, फिर पेरिस में मैडम कामा का सहयोग किया। भीषण आर्थिक संकट से जूझते हुए कई स्थानों पर गये। कुछ समय बाद वेस्टइंडीज के एक टापू पर जाकर वैराग्य भाव में लीन हो तपस्या करने लगे। १९१० ई० के अंत में भाई परमानन्द जी इनसे मिले और इन्हें गौतम बुद्ध की अपेक्षा स्वामी विवेकानन्द को आदर्श मानकर स्वतंत्रता आन्दोलन चलाने की सलाह दी। गुरु गोविन्दसिंह और बन्दा वैरागी के इतिहास की पुनरावृत्ति हुई। लालाजी भाई जी का आग्रह स्वीकार कर अमेरिका जा पहुँचे और वहाँ गदर पार्टी की स्थापना की व नवम्बर १९१३ में 'गदर' पत्र क्रांति मचाता हुआ निकालना शुरू किया। गदर के क्रांतिकारी लेखों और कविताओं से अमेरिका में रहने वाले भाइयों में देशभक्ति की ऐसी आग लगी कि प्रथम विश्व युद्ध (अगस्त १९१४) के समय १८५७ जैसा गदर विद्रोह करके भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अमेरिका से चार हजार लोग भारत आये और बीस हजार आने के लिए तैयार बैठे थे। विद्रोहियों को हथियार भेजने के लिए दो जहाजों की भी व्यवस्था कर ली गई थी, पर ब्रिटिश सरकार सावधान हो गई और भारत के दुर्भाग्य से महान क्रांति जन्म से पहले ही कुचल दी गई।

प्रथम विश्व युद्ध समाप्ति के बाद लालाजी स्वीडन की राजधानी पहुँचे और १९२७ तक वहाँ रहकर इंग्लैंड चले गये। वहाँ से पी० एच० डी० कर अमेरिका पहुँचे। विश्व भ्रमण से थके इस क्रांतिकारी संत के मन में मातृभूमि लौटने की लालसा प्रबल हो गई। मित्रों के प्रयास से उनके भारत आने पर प्रतिबन्ध हटा, पर दैव की लीला कि जब सारा देश अपने महान स्वतंत्रता सेनानी के स्वागत की तैयारी कर रहा था तो अमेरिका के फिलाडेल्फिया नगर में ४ मार्च १९३९ को यह माँ का लाडला माँ की गोद के लिए तड़पता हुआ माँ से हजारों मील दूर अपनी अधूरी इच्छा लेकर सदा के लिए सो गया।

क्रांति पथ का अंगारा बन शत्रु के तन-मन को दहलाने वाले, हर समय खतरे के कामों में भाग लेकर भी शत्रु को चकमा देने वाले, जिनके नेतृत्व में दिल्ली में अंग्रेज लार्ड हार्डिंग पर बम फैंककर अंग्रेजी साम्राज्य का गर्व चूर किया गया, जो १९१५ की क्रांति को सफल बनाने में लाला हरदयाल के विशेष सहयोगी थे। विदेशों में जाकर आजाद हिन्द सेना का निर्माण कर उसे कुशल नेतृत्व (सुभाष) के हाथों में सौंपकर अंतिम सांस तक भारत की स्वतंत्रता के लिए जीने वाले थे रास बिहारी बोस, जिनको पकड़ने के लिए अंग्रेजी सरकार ने साढ़े बारह हजार रु० का इनाम घोषित कर रखा था। क्रांति की सफलता के लिए स्वतंत्र देशों की सहायता को अनुभव करके जब ये विदेश के लिए चलने (अप्रैल १९१५) लगे, तो अपने परम सहयोगी मित्र शचीन्द्रनाथ सान्याल को अत्यन्त निकट खींचकर उनके कन्धे पर हाथ रखकर बड़े स्नेह के साथ कहने लगे-"भई देश छोड़ते मुझे कितना कष्ट होता है यह तुमसे नहीं कह सकता, देखो, खूब सावधान होकर सुनो। भाई, देश के काम को ठीक ढंग पर लाकर तुम भी मेरे पास चले आना।"

कितने संघर्षों के बाद उन्हें जापान की नागरिकता मिली और वहाँ वे ५०००० सैनिकों की आजाद हिन्द फौज बनाने में सफल हुए इनकी चर्चा अन्यत्र की जाएगी। इस महान क्रांतिकारी की इच्छा थी कि उसकी मृत्यु आजाद हिन्दुस्तान में हिमालय पर्वत पर की चोटी पर हो, परन्तु इस इच्छा को मन में समाए यह महावीर २१ जनवरी १९४५ को जापान से ही महाप्रस्थान कर गया।

देश दृष्टि में माता के चरणों का मैं अनुरागी था,
देशद्रोहियों के विचार से मैं केवल दुर्भागी था।
माता पर मरने वालों की नजरों में मैं त्यागी था,
निरंकुशों के लिए अगर मैं कुछ था तो बस बागी था।।

डॉ. बालकृष्ण : संक्षिप्त जीवन-परिचय व उनकी साहित्य साधना

❑डॉ॰ विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ drvivekarya@yahoo.com

हाल ही में प्रसिद्ध आर्य प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द ने डॉ॰ बालकृष्ण का अलभ्य शोध ग्रंथ 'ईश्वरीय ज्ञान : वेद' प्रकाशित किया है। डॉक्टर बालकृष्ण जी के व्यक्तित्त्व एव कृतित्व पर गवेषणापूर्ण प्रकाश डाल रहे हैं डॉक्टर विवेक आर्य

डॉ0 बालकृष्ण का नाम आर्यसमाज की उन महान् हस्तियों में शामिल है जिनका सम्पूर्ण जीवन सकारात्मक कार्यों में एक तपस्वी की भांति समर्पित था। डॉ0 बालकृष्ण किस कोटि के इतिहासज्ञ एवं अर्थशास्त्री थे, उनके इस परिचय से इसका कुछ अनुमान हो सकता है। वे fellow of the royal historical society, fellow of the royal stastical society, the royal economic society, London, member of royal asiatic society bombay, a member of the econometric association of USA, fellowship of the university of bombay, member of historical records commission of india, president of modern history section in history congress in allahabd in 1938 से सम्मानित थे।

आर्यसमाज में कुछ ही विद्वानों को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ऐसा मान मिला जिनमें एक नाम श्री हरबिलास शारदा जी का था।

जन्म एवं शिक्षा

डॉ0 बालकृष्ण का जन्म मुलतान के क्षत्रिय परिवार में 1882 में हुआ। उनका बचपन अत्यंत कठिनाइयों में व्यतीत हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा को पूर्ण करने के लिए आप कभी स्वर्णकार की दुकान पर तो कभी दरजी की दुकान पर कार्य करते थे। ऐसा लगता था कि आपका जीवन ऐसे ही बीत जायेगा पर भाग्य ने पलटा खाया और आपने आगे की पढ़ाई के लिए मिडिल वर्नाकुलर स्कूल में प्रवेश पा लिया जहाँ अपनी प्रतिभा की प्रथम झलक आपने विद्यालय में प्रथम स्थान अर्जित कर दिखाई। उसके पश्चात् आपने मुलतान हाई स्कूल में दाखिला लिया। लाहौर डी0ए0वी0 कॉलेज से बी0ए0 की शिक्षा प्राप्त की तथा गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से एम0ए0 की डिग्री मेरिट के साथ हासिल की।

देश और गुरुकुल की सेवा

उस समय की देश की परिस्थितियों के कारण आपका झुकाव राजनीति की तरफ हो गया। आप विशेष रूप से लाला लाजपतराय एवं सरदार अजितसिंह व गोपाल कृष्ण गोखले के भक्त बन गए थे। कुछ समय पश्चात् आपकी रुचि आर्यसमाज के कार्यों में बढ़ गयी। अपनी योग्यता के आधार पर आप बड़ी सरकारी नौकरी पा सकते थे पर आपने महात्मा मुंशीराम का साथ देना उचित समझा और गुरुकुल कांगड़ी आ गए जहाँ आपने 10 वर्ष तक अर्थशास्त्र का अध्यापन किया और बाद में प्रधानाध्यापक के रूप में भी गुरुकुल में सेवा दी। स्वामी श्रद्धानंदजी जब कभी गुरुकुल से बाहर जाते तो आप उनके पीछे से सारी व्यवस्था सँभालते थे।

विदेश यात्रा

सन 1919 में आपने इंग्लैंड यात्रा की। 1922 में आपने पीएचडी में दाखिला लिया। आप लन्दन में रहते हुए ऑक्सफोर्ड, मेनचेस्टर, स्कॉटलैंड आदि में वैदिक धर्म और अर्थ शास्त्र पर अपने भाषण देने के लिए बड़े बड़े मंचों पर आमन्त्रित किये जाते थे। 1922 में आप स्वदेश लौट आये।

कोल्हापुर नरेश द्वारा आमंत्रित

डॉ0 बालकृष्ण को कोल्हापुर नरेश छत्रपति साहू जी महाराज ने राजाराम कॉलेज के प्रधानाध्यापक के रूप में आमंत्रित किया। गरीब, अशिक्षित एवं विशेष रूप से दलित वर्ग के छात्रों की शिक्षा को लेकर महाराज साहिब विशेष रूप से प्रयासरत थे जिससे उनका सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान संभव हो सके।

राजाराम कालेज में

सन 1919 से 1926 तक राजाराम कॉलेज का सञ्चालन आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथों में था। आपने मृत्युपर्यन्त 21 अक्टूबर 1940 तक इस पद को अपने योगदान एवं अथक परिश्रम से सुशोभित किया जिससे

कॉलेज की ख्याति सम्पूर्ण महाराष्ट्र में फैल गयी। जब आपने कॉलेज का कार्यभार संभाला तब कॉलेज में केवल 293 छात्र पढ़ते थे और केवल आर्ट्स का पाठ्यक्रम था। आपके मार्गदर्शन में विज्ञान विभाग की स्थापना हुई एवं स्नातकोत्तर कोर्स भी पाठ्यक्रम में शामिल हुए और छात्रों की संख्या भी 920 हो गई थी। आप 1929 से लेकर 1936 तक शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर भी रहे थे। आर्यसमाज कोल्हापुर के प्रधान के रूप में भी आपने कार्य किया।

अमरीका में

1933-34 के सर्वधर्म सम्मेलन शिकागो में आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि के रूप में पं0 अयोध्याप्रसाद जी साथ शामिल हुए। इस सम्मलेन में पहले आचार्य रामदेव जी का जाना प्रस्तावित था। आपके न्यूयॉर्क, कोलंबिया आदि विश्वविद्यालयों में वैदिक धर्म पर भाषण हुए। यूरोप में भी आपने वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आपकी पहली पत्नी का देहांत गुरुकुल छोड़ने से कुछ पहले हो गया था। अपने दूसरा विवाह एक महाराष्ट्रियन विधवा से किया जिससे की विधवा विवाह का प्रचार हो सके।

बालकृष्ण जी छत्रपति शिवाजी के नाम से एक विश्व विद्यालय की स्थापना करना चाहते थे जिससे कि युवा छात्रों को वीर शिवाजी के जीवन से प्रेरित कर देश, जाति और धर्म के लिए स्वाभिमानी बनाया जा सके। आपका यह सपना बाद में महाराष्ट्र के प्रथम मुख्यमंत्री एवं आपके शिष्य यसवंत राव चौहान एवं बाला साहिब देसाई ने पूरा किया।

सन 2011 में शिवाजी विश्वविद्यालय द्वारा डॉ0 बालकृष्ण जी की स्मृति में मराठी भाषा में उनका जीवन चरित्र 'बाल कृष्ण अणि आठवणी' के नाम से प्रकाशित किया गया है जिसके लेखक डॉ0 जय सिंह राव पंवार हैं।

साहित्य साधना

एक लेख में किसी भी विभूति का सम्पूर्ण जीवन और उनकी सभी उपलब्धियों को समाहित करना असंभव हैं। मैं इस लेख में मूल रूप से डॉ0 बालकृष्ण द्वारा की गई साहित्य सृजन तपस्या का यथाशक्य उल्लेख करना चाहूँगा।

गुरुकुल कांगड़ी में अर्थशास्त्र के अध्यापन के साथ साथ आप 'अर्थशास्त्र, वेद एवं इतिहास' विषय में शोध में भी लीन रहे जिसका परिणाम यह पुस्तक **ईश्वरीय ज्ञान वेद** है। आपने वीर छत्रपति शिवाजी महाराज पर ऐतिहसिक पीएचडी कर अपनी प्रतिभा का लोहा विश्व के सामने मनवाया।

डॉ0 बालकृष्ण का साहित्य सृजन (In English)

1.Shivaji the Great :-वीर शिवाजी के विषय में डॉ0 बालकृष्ण जी लिखते हैं कि वीर शिवाजी की तुलना विदेशी इतिहासकारों ने जहाँ नेपोलियन और हैनीबल से की है, वही देशी लेखकों ने अतिशयोक्ति कर उन्हें शिवजी का साक्षात् अवतार ही घोषित कर दिया है। लेखक के अनुसार शिवाजी हिन्दू स्वराज्य एवं हिन्दू जनता के रक्षक के रूप में देशवासियों के ह्रदय में विशेष स्थान रखते हैं। शिवाजी के विषय में अनुसन्धान करने के लिए लेखक ने लन्दन, बताविया, हेग, नेदरलैंड्स पूना, गोवा, मद्रास, बॉम्बे, तन्जोर, सतारा, पोंडीचेरी जैसे स्थानों के अभिलेखाकारों से आवश्यक सामग्री को संग्रहीत किया था। सात वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात् लेखक ने 4 भागों में 1650 पृष्ठों में SHIVAJI THE GREAT के नाम से अपनी पुस्तक की रचना 1932 में की थी, जिसका चतुर्थ भाग उनकी मृत्यु के पश्चात् छापा गया था। आप शिवाजी के पुत्र शम्भाजी पर भी पुस्तक लिखना चाहते थे जिसकी सामग्री आपने डच सूत्रों से एकत्र भी कर ली थी।

मेरे विचार से इससे अधिक इस पुस्तक के विषय में और क्या कहा जाये कि आज तक वीर शिवाजी पर जितने भी शोध ग्रन्थ लिखे जाते हैं वे सब इस पुस्तक से प्रमाण लिए बिना पूरे नहीं होते।

2. Commercial Relations between India and England -1924:- इस पुस्तक में लेखक ने ब्रिटेन एवं भारत के मध्य सन 1600-1752 में हुए आपसी व्यापार पर अपने विचार प्रकट किये हैं। भारत और इंग्लैंड के मध्य हुए व्यापार का भारत और इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, आर्थिक पहलु, दूरगामी-परिणाम, देश के कामगारों पर उसका असर आदि विषयों पर गंभीर मंथन किया है।

3. Hindu Philosophers on Evolution-1934

जगत् का क्रमिक विकास विषय पर यह अपने ही तरह की एक अलग पुस्तक है जिसमें भारत के दर्शनशास्त्र का विकास और उसका ग्रीक सभ्यता से सम्बन्ध सप्रमाण दर्शाया गया है। इस पुस्तक में सृष्टि की उत्पत्ति, उसका विकास, पञ्च तत्व, मानव जीवन की उत्पत्ति, प्रकृति का स्वरुप और उसका आधार, अमैथुनी सृष्टि, पशु-पक्षियों की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है। इस विषय पर उपनिषदों का व कपिल मुनि के सांख्य दर्शन का मत भी दर्शाया गया है। दर्शन-शास्त्र की यह पुस्तक आधुनिक वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करने में सक्षम है। मुख्य रूप से भारतीय दर्शन में सृष्टि उत्पत्ति और विकासवाद पर यह पुस्तक प्रभावशाली

रूप से अपना मत रखती है। मेरे विचार से इस पुस्तक का दोबारा से प्रकाशन होना चाहिए।

4. The Industrial decline in India

इस पुस्तक में सप्रमाण बतलाया गया है कि किस प्रकार अंग्रेजों ने अपने देश के वस्त्रों को प्रोत्साहन देने के लिए भारतीय वस्त्रों पर 1690 में 20 प्रतिशत तक कर लगा दिया था और यहाँ तक कि भारतीय रेशम और अन्य वस्त्रों को पहनने तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। इस प्रतिबन्ध को तोड़ने वालों पर भारी जुर्माना लगाया जाता था। इससे न केवल अंग्रेजी कम्पनियों को प्रोत्साहन मिला अपितु भारतीय उद्योग बर्बाद हो गया जिससे भारत देश में गरीबी और बेरोजगारी फैल गयी।

5. Demands of Democracy

भारत में राज्य करते हुए अंग्रेजों की कठिनाइयों पर इस पुस्तक में उस पर प्रकाश डाला गया है।

6. Commerical survey of Kohlapur में कोहलापुर की अर्थ व्यवस्था पर विचार किया गया है।

7. From the Counter to the Crown ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा एक व्यापारिक कम्पनी से भारत देश का शासक बनने की एक रोचक गाथा।

8. Hindu Economics हिंदुओं की अर्थव्यस्था पर प्रकाश डाला गया हैं

9. Distribution of Real Property in Kolhapur City कोहलापुर में भू संपत्ति विभाग पर एक लेख

10. The principles of Economics अर्थ शास्त्र के सिद्धांतों पर एक विचारणीय पुस्तक है।

11. Vedic Pslams वेदों के मन्त्रों की व्याख्या (in hindi)

१२. भारत वर्ष का संक्षिप्त इतिहास

१३. वेदोक्त राज्य एवं प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली

(यह पुस्तक लेखक द्वारा गुरुकुल में प्रवास के अवसर पर लिखी गयी थी। इसका प्रकाशन काल आसाढ़ 1971 है।)

इसमें प्राचीन आर्य साहित्य एवं इतिहास को लेकर प्राचीन भारत में राज विषय में आर्यों की उन्नति और अवनति के कारण बताये गए हैं। वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के दृढ़ प्रमाण दिए गए हैं। हमारे पूर्वजों द्वारा जो विचार राजधर्म के विषय में हजारों वर्ष पहले बता दिए गए थे वे विचार यूरोप में बमुश्किल 300-400 वर्ष ही पुराने हैं। राजनीति के भिन्न भिन्न प्रकार भी विश्व को आर्यों की ही देन हैं। वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि में व्यक्ति अपने गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर ब्राह्मण अथवा शूद्र कहलाता है और राजा का पुत्र राजा ही बनेगा ऐसी व्यवस्था वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध है। इसके विरुद्ध जाने से ही भारतवर्ष की उन्नति रुक गयी। इसके अलावा राजा की शक्तियों को बढ़ाना, राज्य को राजा की निजी जायदाद बनाना, वंश परम्परा से राजा बनाना आदि कारणों से इस देश की अवनति हुई।

14- Modern Constitutions

१५- ईश्वरीय ज्ञान : वेद

इस पुस्तक की आधारशिला गुरुकुल में वेदभाष्य के पठन के समय लेखक के मन में बनी जब उन्हें इस शंका ने आ घेरा की वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों है। अन्यों से सहायता लेने पर भी जब इस शंका का समाधान न बना तब लेखक ने तीन वर्षों में कोई 400 ग्रन्थ पढ़े जिसके आधार पर इस ग्रन्थ की रचना हुई। इस ग्रन्थ में लेखक ने प्रथम भाग में ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता, ईश्वरीय ज्ञान की परीक्षाएँ, वेदों में अनित्य इतिहास का अभाव, वैदिक ऋषियों पर विचार, यूरोप के विद्वानों का मत, वेदार्थ, शाखा भेद, मन्त्रक्रम की नित्यता पर अपने विचार रखे हैं।

दूसरे भाग में वेदों को अपौरुषेय सिद्ध करने के लिए वेदों की आन्तरिक साक्षी, ब्राह्मण, उपनिषद्, दर्शन, स्मृति, पुराणों आदि ग्रंथों की साक्षी प्रस्तुत की गई हैं। एक ही पुस्तक में वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने के इतने प्रमाण शायद ही किसी अन्य पुस्तक में एक साथ मिलते हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू लेखक की वेदों के प्रति श्रद्धा है जिसपर शंका उत्पन्न होने पर लेखक अपनी तपस्या से उसका समाधान करते हैं।

16- अग्निहोत्र व्याख्या-1911

इस पुस्तक में लेखक ने अग्निहोत्र, उससे होने वाले लाभ, उससे सम्बंधित शंकाओं का सुंदर रूप में विवेचन प्रश्न उत्तर शैली में किया है। अग्निहोत्र करने के क्या क्या लाभ हैं। होम में कैसे कैसे पदार्थ डालने चाहिएँ और उनके क्या क्या लाभ हैं। अनेक रोगों में अग्निहोत्र के क्या क्या लाभ हैं आदि। शंका समाधान के पश्चात् अग्निहोत्र विधि को मन्त्रों के अर्थ के साथ दिया गया हैं।

१७-Sukraniti with notes and explanations

१८-अर्थ शास्त्र के सिद्धांत -

(मुख्य सोर्स किर्लोस्कर मासिक मराठी पत्रिका के तीन भाग 185, 186, 187 हैं (जून, जुलाई और अगस्त 1935) मेरी आत्मकथा के रूप में डॉ० बालकृष्ण द्वारा लिखे गए लेख।)

शिक्षा से ही होगा सामाजिक परिवर्तन!

❑डॉ० जगदीश गाँधी,
संस्थापक-प्रबन्धक,
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

महाविनाश की ओर बढ़ता विश्व :- आज सारे विश्व में अशांति एवं अराजकता का वातावरण व्याप्त होता चला जा रहा है। उद्देश्यविहीन शिक्षा एवं धार्मिक अज्ञानता के कारण विश्व में चारों ओर लोगों के हृदय में वैमनस्य, भेदभाव, द्वेष व हिंसा की भावना बढ़ती ही चली जा रही है। मनुष्य की शक्ल में कोई तथाकथित हिंदू तो कोई मुसलमान, कोई ईसाई तो कोई पारसी आदि दिखाई दे रहा है किन्तु मनुष्यता इनमें से गायब होती जा रही है। वास्तव में सारे संसार से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मूल मंत्र लुप्त सा होता जा रहा है। इसके साथ ही सारे विश्व का वातावरण प्रदूषित हवा, मिट्टी, पानी, ग्लोबल वार्मिंग, परमाणु बमों के परीक्षण, आतंकवाद, वनों की कटाई आदि के कारण भी विषाक्त होता जा रहा है। परिणामस्वरूप मनुष्य के हृदय से लेकर संसार तक का सारा वातावरण प्रदूषित होता चला जा रहा है। और अगर यह स्थिति इसी प्रकार से बिगड़ती चली गई तो निश्चित ही आने वाले समय में विश्व के सात अरब संसारवासियों का जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

उद्देश्यपूर्ण शिक्षा से ही होगा सामाजिक परिवर्तन:- संसार भर में व्याप्त इन समस्याओं के हल के लिए शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित नेल्सन मंडेला ने कहा था कि 'संसार में शिक्षा ही सबसे शक्तिशाली हथियार है जो दुनिया को बदल सकती है।' वास्तव में संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा किसी भी बालक के पेन में इतनी ताकत भर सकती है कि वह सारे विश्व में सामाजिक परिवर्तन ला सकता है। इसके लिए हमें विश्व के प्रत्येक बालक को शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वव्यापी समस्याओं की जानकारी कराना चाहिए तथा बच्चों को बाल्यावस्था से ही इन समस्याओं को बड़े होकर हल करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अर्थात् बालक को सामाजिक परिवेश के साथ विश्व की वास्तविक प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति सजग रहना चाहिए।

शिक्षा से ही बुराइयों को मिटाया जा सकता है :- बालक की शिक्षा के सम्बन्ध में रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा है कि शिक्षा प्रत्येक देश के सामाजिक जीवन का साधन है तथा सार्वभौम विश्व संस्कृति के निर्माण के लिए विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों की संग्रहकर्त्ता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह विश्व को प्रकाशमान बनाए रखने के लिए अपने मस्तिष्क के दीप को प्रकाशित रखे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एस० राधाकृष्णन् जी मानते थे कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाए तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। उनका मानना था कि करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं। इसलिए शिक्षा-व्यवस्था का यह प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि वह बच्चों को इस प्रकार से संवारे और सजाये कि उनके द्वारा शिक्षित किये गये सभी बच्चे 'विश्व का प्रकाश' बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें।

बालक को 'गुड' तथा 'स्मार्ट' दोनों बनाना चाहिए:- वर्तमान परिवेश में शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक हो चुका है। इसलिए आज हमें प्रत्येक बालक को अंग्रेजी, गणित, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों के उच्च कोटि के ज्ञान के साथ ही उसे सामाजिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान भी देना चाहिए। आज हमारी शिक्षा बच्चों को केवल उनके निर्धारित विषयों का ज्ञान कराकर केवल स्मार्ट बना रही है जबकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य प्रत्येक बालक को गुड तथा स्मार्ट दोनों बनाना होना चाहिए। यदि हमने बालक को सर्वोच्च भौतिक शिक्षा के साथ ही उसे ईश्वर की आज्ञाओं पर चलना सिखा दिया तो वह बालक परमपिता परमात्मा की बनाई हुई इस सारी दुनिया में शांति की स्थापना के लिए कार्य करके महान बन जायेगा। इसके लिए हमें बाल्यावस्था से ही प्रत्येक बालक को गुड एवं स्मार्ट बनाते हुए उनमें विश्वव्यापी समस्याओं को हल करने की अपार क्षमता को विकसित करना चाहिए। अर्थात् बालक को सही-गलत, अच्छा-बुरे का ज्ञान शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है और इससे बालक का शैक्षिक, मानसिक व सांसारिक विकास संभ्भव है।

वास्तव में शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा दुनिया भर में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को समाप्त करके एक सुन्दर एवं सुरक्षित विश्व का निर्माण संभव है। इसलिए हमें प्रत्येक बालक को बाल्यावस्था से ही संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण अर्थात् (१) भौतिक (२) सामाजिक एवं (३) आध्यात्मिक शिक्षा देकर उसे 'पूर्ण गुणात्मक व्यक्ति' (टोटल क्वालिटी पर्सन) बनाना चाहिए।

धर्म की मुख्य शिक्षा 'लोक कल्याण' ही है :- 'रामायण' की एक लाइन में सीख है कि सीया राम मय सब जग जानी अर्थात् संसार के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति मेरा राम-सीता की तरह का श्रद्धाभाव हो। 'गीता' का सन्देश है कि न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना चाहिए। वेदों का भी यही सन्देश है कि उदार चरित्र वाले के लिए यह वसुधा कुटुम्ब के समान है। सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो। समस्त प्राणी मात्र के हित में रत हो जाये। 'बाईबिल' की एक लाइन में सीख है कि अपने पड़ोसी को भी अपने जैसा प्रेम करो। 'कुरान' की सीख है कि ऐ खुदा सारी खिलकत को बरकत दे। 'गुरू ग्रन्थ साहिब' की सीख है कि जब तेरे हृदय में सारे विश्व के लिए भलाई की भावना होगी तो नानक का नाम तुझे परमात्मा की ओर ले जायेगा। किताबे अकदस की सीख है कि यह पृथ्वी एक देश है और हम सब इसके नागरिक है। इसलिए हमें विश्व के प्रत्येक बच्चे को धर्म की इन शिक्षाओं का ज्ञान कराने के साथ ही साथ इन शिक्षाओं पर चलने वाला भी बनाना है। धर्म का एक ही उद्देश्य है कि बालक को वह रास्ता बताना जो शांति और प्रेम की तरफ अग्रसर हो।

बालक को 'विश्व नागरिक' के रूप में तैयार करें :-

विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना के लिए हमें प्रत्येक बालक के कोमल मन-मस्तिष्क में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद ५१' के विचार रूपी बीज बचपन से ही बोने चाहिएँ। हमारा मानना है कि भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद ५१' रूपी बीज बोने के बाद उसे स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण व जलवायु प्रदान कर हम प्रत्येक बालक को एक विश्व नागरिक के रूप में तैयार कर सकते हैं। इसके लिए प्रत्येक बालक को बचपन से ही परिवार, स्कूल तथा समाज से ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे वह अपने हृदय में इस बात को आत्मसात् कर सके कि ईश्वर एक है, धर्म एक है तथा मानवता एक है।

सबसे शक्तिशाली हथियार :- परमपिता परमात्मा द्वारा बनाया गया यह विश्व समाज अपना है, पराया नहीं है। इसलिए सारी वसुधा को सबके रहने योग्य बनाने के लिए हमें जीवन-पर्यन्त कार्य करना चाहिए और इसकी शुरूआत हमें विश्व के प्रत्येक बालक को बचपन से ही 'संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा' देकर करनी चाहिए क्योंकि उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से शिक्षित बच्चों की 'कलम की ताकत' से ही सारे विश्व में सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

वास्तव में शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा दुनिया भर में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को समाप्त करके एक सुन्दर एवं सुरक्षित विश्व का निर्माण संभव है। इसलिए हमें प्रत्येक बालक को बाल्यावस्था से ही संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण अर्थात् (१) भौतिक (२) सामाजिक एवं (३) आध्यात्मिक शिक्षा देकर उसे 'पूर्ण गुणात्मक व्यक्ति' (टोटल क्वालिटी पर्सन) बनाना चाहिए। पूर्ण गुणात्मक व्यक्तित्व से ओतप्रोत बालक ही अपने 'कलम' की शक्ति का इस्तेमाल करके सारे विश्व में सामाजिक परिवर्तन करके एकता एवं शांति की स्थापना करेगा। इस प्रकार संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा ही वह सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग करके हम संसार भर में व्याप्त समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकते हैं।

लघुकथा

'मां ये गरीबी क्या होती है?'

झुग्गी झोंपड़ी में रहने वाले एक बच्चे ने गंदे पॉलिथिन का गट्ठर एक तरफ फैंकते हुए अपनी मां से पूछा।
मां के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान फैल गई। उसने बच्चे से कहा- आओ बेटा तुम्हें गरीबी दिखाती हूँ।
वह उसे एक तरफ ले गई जहाँ दो कुत्ते बैठे थे।
उसने एक रोटी का टुकड़ा उनकी ओर फैंका। ताकतवर कुत्ता रोटी के टुकड़े की तरफ झपटा, दूसरा कुत्ता दुम दबाकर बैठा रहा।
देखा बेटा, ये है गरीबी- बेबसी दूसरा नाम है इसका!
'फिर हम तो गरीब नहीं हैं न माँ?
माँ कुछ कह पाती, इससे पहले ही उसका पिता नशे में झूमता हुआ आया, माँ के साथ मारपीट करते हुए दो चार थप्पड़ रसीद किये तथा पॉलिथिन बेचकर इकट्ठे किये हुए पैसे उसकी मां से छीनकर ले गया। मासूम को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था।

रवीन्द्रकुमार सोनी, ६, आर्यसमाज रेलवे रोड़, जींद

पण्डित चमूपति जी की अूमल्य कृति
'संध्या-रहस्य' का धारावाह प्रकाशन

शिखा बंधन, गुरुमंत्र और आचमन

१-शिखा-बन्धन

यूं तो वेदों का अक्षर २ ही पवित्र ज्ञान का स्रोत है, और यह कहना भी नास्तिकता है कि वेद के अमुक स्थल में दूसरे स्थलों की अपेक्षा अधिक ज्ञानामृत है। तथापि समस्त वेद मन्त्रों की शिखा गुरुमन्त्र को ठहराया है। यह शिरोमणि मन्त्र वेदों का सार है। द्विज का बाह्य चिह्न यज्ञोपवीत है, तो अन्तरीय लक्षण गायत्री का ज्ञान है। जन्म के समय जब बालक बोलना नहीं जानता, हम उसे वेद-तिलक 'ओ३म्' का स्वाद चखा कर मधुमान् बनाते हैं। दूसरा जन्म सावित्री की गोद में गुरु के घर होता है। उसमें प्रथम उपदेश इसी सवितृ-मन्त्र का किया जाता है। इसी से इस मन्त्र का नाम गुरुमन्त्र है। या यों कहो कि सब मन्त्रों में गुरु अर्थात् प्रथम होने का गौरव रखने वाला यह मन्त्र है।

गायत्री मन्त्र इसको इसलिये कहते हैं कि इसका छन्द गायत्री है, जिसमें २४ अक्षर होते हैं। इस मंत्र में एक अक्षर न्यून है। उसकी पूर्ति पिंगलसूत्र "इयादि पूरण:" के अनुसार "वरेण्यम्" में "इ" बढ़ाने अर्थात् इस शब्द को "वरेणियम्" पढ़ने से की जाती है। (यह एक पक्ष है। मंत्र में निचृद् गायत्री छन्द है, जिसमें २३ अक्षर होते हैं।) इसे गायत्री इसलिये भी कहते है कि यह गाने अर्थात् भजन करने वाले भक्त को भवसागर से तार देता है।

सवितृ-मंत्र भी इसी का नाम है। इस नाम का कारण यह है कि इस मंत्र का देवता सविता है अर्थात् इस मंत्र में प्रेरक परमात्मा की स्तुति है और उसी से प्रार्थना की है।

"वेद-माता" का अभिप्राय भी गायत्री-मन्त्र है, क्योंकि यह मन्त्र वेदों का अत्यन्त मान करने वाला है, जैसे हम आगे व्याख्या में दिखायेंगे। यहाँ इतना ही समझ लेना पर्याप्त है कि वेद की शिक्षा इसी मन्त्र से आरम्भ होती है।

सन्ध्या से पूर्व मार्जन करो, जिसका अभिप्राय मार्जन मंत्र के साथ बतायेंगे। तत्पश्चात् शिखा मंत्र से शिखा को बांधो, ताकि परमात्मा के सम्यक् ध्यान में बालों के बिखरने से मन न बिखरे। तथा शरीर के मुख्य भाग को छूकर धर्म्म के मुख्य अंग का ध्यान किया जाए। यहां प्राणायाम भी कर लेना चाहिए, जिसका प्रयोजन और विधि प्राणायाम मन्त्रों की व्याख्या में बताई है-वहां देख लो।

गुरुमन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। ऋग्वेद ३/६२/१०

अन्वय- भूः। भुवः। स्वः। सवितुः। देवस्य। ओ३म् (परमात्मनः) तत्। भर्गः। धीमहिः। यः। नः। धियः। प्रचो-दयात्।

'ओ३म्'-अव् धातु से रक्षकार्थ है।

दूसरा अर्थ- इस शब्द में तीन मात्रायें हैं। अ, उ, म्। श्रीस्वामी दयानन्द जी ने (१) 'अ' से 'विराट्' अर्थात् विविध जगत् का प्रकाशक, "अग्नि" ज्ञान-स्वरूप, पूजा करने योग्य, "विश्व" अर्थात् सर्व-व्यापक (२) 'उ' से हिरण्य-गर्भ अर्थात् तेजोमय पदार्थों का आधार, 'वायु' अर्थात् बलवान् "तेजस्" अर्थात् तेजोमय तथा (३) 'म्' से 'ईश्वर' अर्थात् बलवान् 'आदित्य' अखण्ड, 'प्राज्ञ' अर्थात् ज्ञानवान् लिया है। माण्डूक्योपनिषद् में अ से वैश्वानर, उ से तेजस् और म् से प्राज्ञ अर्थ लिया है। सो जितनी दूर किसी ऋषि की दृष्टि पहुंची इस शब्द का उतना महत्त्व उसके बुद्धि-गोचर हुआ। बात यह है कि 'ओ३म्' नाम में परमात्मा के सब नाम आ गए हैं। यह प्रभु का निज नाम है और सार्थक नाम है। प्रकरणानुसार इस शब्द की महिमा आगे दिखाई जायगी।

भूः भुवः स्वः।

ये तीन व्याहृतियां कहाती हैं। इन पर ऋषियों ने

सन्ध्या का अभिप्राय मन को व्यक्तित्व के तंग वृत्त से बाहर निकाल विशाल करना है, जिसका केवल मात्र उपाय सर्वव्यापक परमात्मा का ध्यान है, जो भूः, भुवः, स्वः शब्दों से किया गया है। इस पर भी बड़ी बात यह कि प्रार्थना केवल अपने लिये नहीं, किन्तु त्रिलोक-निवासी प्राणिमात्र के हितार्थ है। इससे बढ़कर और उदारता क्या हो?

बहुत ध्यान लगाया है और विविध अर्थ बताए हैं। तैत्तिरीय-उपनिषद् में इनके ये अर्थ आते हैं-

(१) "भूः" प्राण अर्थात् जो श्वास हम अन्दर लेते हैं।
"भुवः" अपान अर्थात् जो श्वास बाहर जाता है।
"स्वः" व्यान प्राण जो सारे शरीर में है। स्वामी जी प्राण का अभिप्राय जगत्प्राण परमात्मा लेते हैं। अपान से दुःखों का अपनयता (दूरीकर्त्ता) जगदीश, और व्यान से जगद्व्यान (सर्व-व्यापक प्रभु)।

(२) भूः= ऋग्वेद, भुवः=यजुर्वेद, स्वः=सामवेद, और इन तीनों विद्याओं से पूर्ण अथर्ववेद।

(३) भूः=पृथिवी, भुवः=अन्तरिक्ष अर्थात् आकाश, स्वः= द्युलोक अर्थात् सूर्य्यादि।

मंत्र का अर्थः-

(भूर्भुवः स्वः) जगत्प्राण, दुःखों के नाशक, सुख-स्वरूप, सर्व-व्यापक, (सवितुः) प्रेरक तथा उत्पादक (देवस्य) प्रकाशस्वरूप (ओ३म्) ओ३म् के (तत्) उस प्रसिद्ध (भर्गः) तेज को हम (भूर्भुवः स्वः) पृथिवी, अन्तरिक्ष, तथा भूलोकों में स्थित प्राणी, ऋग् आदि चार वेदों द्वारा प्राणायाम से मन में स्थित कर (धीमहि) धारण करते हैं अथवा ध्यान में लाते हैं (यः) जो ओ३म् (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) सन्मार्ग अर्थात् धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरित करे।

गुरुमन्त्रः- बच्चे का स्वभाव है कि वह जो कुछ चाहता है, अपने लिये चाहता है। कुटुम्ब तथा समाज का विचार उसके संकुचित मस्तिष्क में नहीं समा सकता। ज्यों २ आयु बढ़ती है, गृहस्थ तथा समाज से सम्बन्ध जुड़ता है, त्यों २ मनुष्य स्वार्थगत जीवन को छोड़ संकोच की ग्रन्थियां तोड़ता है, और तब उसके परिश्रम का उद्देश्य स्वार्थ-पूर्ति नहीं, किन्तु स्वसन्ततिपालन तथा जाति का हितचिन्तन हो जाता है। यदि शिक्षा अनुकूल हो तो।

सन्ध्या का अभिप्राय मन को व्यक्तित्व के तंग वृत्त से बाहर निकाल विशाल करना है, जिसका केवल मात्र उपाय सर्वव्यापक परमात्मा का ध्यान है, जो भूः, भुवः, स्वः शब्दों से किया गया है। इस पर भी बड़ी बात यह कि प्रार्थना केवल अपने लिये नहीं, किन्तु त्रिलोक-निवासी प्राणिमात्र के हितार्थ है। इससे बढ़कर और उदारता क्या हो?

हमने भूमिका में बताया था कि शक्तिमान् के ध्यान से शक्ति आती है। यहाँ 'धीमहि' शब्द का अर्थ धारण और ध्यान दोनों हैं। तैजस के तेज को ध्यान-गोचर कर स्वयम् तेजोमय बनने का प्रयत्न किया है। यही उपासना है। फिर उसका साधन भी बताया है कि यह वेदों के अध्ययन से ही संभव है।

परमात्मा 'सविता' है अर्थात् प्रेरक और उससे विनय की है कि हे प्रभो! हमारे हित और अहित को आप जानते हैं। हमें आप उस मार्ग में डालिये कि-

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्य्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।। (ऋ० ५/५१/१५)

जीवन के सब अंगों में सफलता प्राप्त हो और हम उदारता और अहिंसा के रास्ते आपके दर्शन करने के योग्य हों।

गुरु-मन्त्र में मानव जीवन का उद्देश्य रखकर आगे के मन्त्रों में उसकी पूर्ति के साधन वर्णन किये हैं।

गुरुमन्त्र ऐसा मन्त्र है, कि जिस विषय में लगाओ, लग जाय, यहाँ उपासना विषयक होने से इसी विषय के अर्थ किये हैं।

आचमन-मन्त्र

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।। यजुर्वेद ३६/१२

अन्वयः- ओ३म् देवी (देव्यः) आपः अभिष्टये पीतये नः शं भवन्तु। शं योः नः अभिस्रवन्तु (स्रावयन्तु)।

(ओ३म्) ईश्वर का निज नाम है। यदि इसकी पूरी व्याख्या की जाये तो इसमें ईश्वर के सभी गुण और विशेषण आ जाते हैं। ऐसे विशाल अर्थ का संसार भर की भाषाओं में कोई और शब्द नहीं है।

(देवीः) सब अच्छे (दिव्य) गुणों का भण्डार। गुण दो प्रकार के हैं (१) दैवी (२) दानवी। जितने अच्छे गुण हैं अर्थात् वे गुण जो धारण करने चाहियें, उन्हें दिव्य गुण कहते हैं। इनके विपरीत जो त्याज्य अवगुण हैं, उन्हें दानवी गुण कहते हैं। ईश्वर को यहाँ देवी अर्थात् सद्गुण-विशिष्ट कहा है। विचार करने पर इस शब्द की विशालता का अनुमान किया जा सकता है। **(आपः)** सर्व-व्यापक परमात्मा **(अभिष्टये)** चाही हुई अर्थात् पूर्ण (पीतये) तृप्ति अथवा आनन्द के लिये (न) हमें (शं) रोग मिटाने वाला अथवा सुख देने वाला (भवन्तु) हो! और (शंयोः) सुख और अभय को (नः) हमारे (अभि) सब ओर से (स्रवन्तु) चुवाए।

ओं के अतिरिक्त 'देवीः' और 'आपः' ईश्वर के नाम हैं। ये दोनों शब्द व्याकरण में बहुवचन और स्त्रीलिग के हैं। इनके लिये 'भवन्तु' और 'स्रवन्तु' क्रियाएं भी बहुवचन की आई हैं। शंका उठ सकती है कि ईश्वर तो एक है, उसके लिये बहुवचन का प्रयोग क्यों? इसका उत्तर यह है कि 'आपः' शब्द एक वस्तु का नाम होता हुआ भी व्याकरण में बहुवचनवाची रहता है।

ईश्वर का वास्तविक नाम, जैसे ऊपर बताया गया,

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

आलू और स्वास्थ्य

'आयुर्वेद शिरोमणि' डॉ० मनोहरदास अग्रावत,
एन० डी० विद्यावाचस्पति (प्राकृतिक चिकित्सक) मो० ०८९८९७४२०४७

आलू को सब्जी बाग का राजा कहा जाता है। यह सस्ता होने के कारण गरीब की कुटिया में तथा विटामिन प्रधान होने के कारण अमीर के राजप्रासादों में समान रूप से आदर पाता हे। इसका आदि वास-स्थान दक्षिण अमरीका है, अमेरिका की खोज के पश्चात् जब कोलम्बस दूसरी बार समुद्रयात्रा से लौटा तब वह साथ में आलू लेकर आया। स्पेनवासियों ने उसे यूरोप में प्रवर्तन करने की कोशिश की थी किन्तु प्रायः एक सौ वर्ष तक उन्होंने उसे ग्रहण करने में अनिच्छा जताई थी, सब की धारणा थी कि यह एक विषैली सब्जी है। सन् १७३१ ई० में जब फ्रांँस ने घोषणा की कि दुर्भिक्ष में गेहूँ के बदले एक अच्छा खाद्य आविष्कार करने वाले को अच्छा पुरस्कार मिलेगा। तब सभी की नजर 'आलू' के ऊपर आकृष्ट हुई थी।

उपयोगिता और मान्यता:- आलू वर्तमान में संसार के हर देश में कुल खाद्यों का एक विशेष अंग ग्रहण कर रहा है, यह देखा गया है कि विगत सन् १७३४ ई० से १७३९ ई० के बीच इंग्लैण्ड के हर आदमी ने औसत २१० पौंड आलू ग्रहण किया था। इसी अवधि में डेनमार्क में २४६, जर्मनी में ३९८, फ्राँस में ४०० व बेलजियम में ४४० पौंड प्रति व्यक्ति औसत खपत थी।

निहीत तत्त्व:- आलू विभिन्न खाद्य मूल्य से समृद्ध है। विश्लेषण करके देखा गया है कि आलू में औसत 1.6 भाग प्रोटीन, 0.6 भाग धातव लवण, 22.9 भाग शर्करा, 0.01 भाग कैलसियम, 0.03 भाग फासफोरस, 0.01 (मिग्रा) भाग लोह तथा 74.7 भाग जल है।

आलू में विटामिन:- इसमें विटामिन 'ए' थियामिन, विटामिन 'सी' रिवोफलाविन तथा नयाचीन भी पाये जाते हैं। विटामिन 'सी' आलू का एक प्रधान उत्स है। पुराने जमाने में यूरोप में लाखों आदमी स्कर्वी रोग से मृत्यु के शिकार होते थे। आलू की खेती शुरू होने के बाद यूरोप से स्कर्वी रोग लुप्त हो गया। जब आलू की फसल नष्ट होती थी, सिर्फ तब ही स्कर्वी का आविर्भाव होता था, इसलिये 'सी' विटामिन को स्कर्वी निरोधक विटामिन कहा जाता है।

आलू और स्वास्थ्य:- आलू का प्रोटीन यद्यपि अल्प है तो भी उसे एक उच्च श्रेणी का प्रोटीन गिना जाता है। वयस्क लोगों का यथेष्ट मात्रा में आलू खाने से ही प्रोटीन का काम चल जाता है। आलू के भीतर शर्करा खाद्यों का परिमाण भात-रोटी के समान है। अतः यथेष्ट मात्रा में आलू खाने पर भात-रोटी नहीं खाने से भी काम चल जाता है।

किसी-किसी का ऐसा विचार है कि ज्यादा आलू खाने से मधुमेह रोग पैदा हो जायेगा। किन्तु यह एक गलत धारणा है। एक विख्यात डॉक्टर ने कहा है कि भात-रोटी के बदले में आलू खाने से मधुमेह रोग नहीं हो सकता है। जबकि भात या रोटी अम्लधर्मी खाद्य एवं आलू क्षारधर्म विशिष्ट होता है। आलू के भीतर जो धातव लवण रहते हैं वे रक्त का क्षारत्व जारी रखने में और देह से यूरिक एसिड बाहर करने में विशेषरूप से सहायता करते हैं, इसके अलावा आलू अत्यन्त सुपाच्य है। आलू का सैंकड़ा ९२ से ९९ भाग तक परिपाक पाता है।

आलू विभिन्न रूप से खाया जाता है। किन्तु जब इसका छिलका नहीं फैंककर उबाल कर खाया जाय तभी वह सबसे अधिक उपकारी होता है। क्योंकि आलू के छिलके के ठीक नीचे ही आलू का अधिकांश प्रोटीन, धातव लवण तथा पुष्टिकर चीजें मौजूद रहती हैं। यदि इसे फेक दिया जाय तो आलू खाना ही बेकार होता है।

बहुत वर्ष पहले एक जर्मन जहाज के नाविक एक नये तथा अपरिचित रोग से आक्रान्त हुए थे। बहुत डॉक्टरों ने उनको देखा और चिकित्सा की; किन्तु उससे कोई हल नहीं निकला। इसके बाद खाद्यों के बारे में एक विशेषज्ञ ने खोजकर देखा कि जहाज के नाविकों का प्रधान खाद्य ही आलू था। वे आलू का छिलका उतारकर सिर्फ भीतर की चीजें खाते थे। अन्यान्य तरकारियों का भी ऐसा ही उपयोग किया जाता था, तब वे आलू तथा अन्यान्य तरकारियों (सब्जियों) के छिलके रखकर भीतर के अंश फैंक देने को बोले एवं छिलकों को सिझाकर सूप के साथ खाने का उपदेश दिया। यह आश्चर्य की बात है कि जिन्होंने यह चिकित्सा ग्रहण की उनमें से सभी ने आरोग्य लाभ किया।

जब भी आलू खाना हो तब पूरा आलू छिलके के साथ उबाल कर खाना चाहिये। सिझाने के जितने तरीके प्रचलित हैं उनमें से भाप से सिझाना ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुआ है। ऐसा सिझाने से इसके भीतर इतना 'सी' विटामिन मौजूद रहता है कि 'सी' विटामिन के लिए खट्टे फलों के

स्थान में खाया जा सकता है। सिझ जाने के बाद ही आलू को बाहर कर चीरा देकर अंदरूनी भाप बाहर कर देना चाहिये। अगर सिझे हुए आलू को ऐसे ही रख दिया जाय तब वह मोम के समान चिपचिपा और कठिनता से पचने वाला हो जाता है। सिझने के बाद आलू जब बालू के समान होता है तभी सबसे अधिक पचने वाला होता है। किन्तु तला हुआ तथा भुना हुआ आलू खाने से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि वह पेट के भीतर पेट तथा शरीर के विभिन्न रोग उत्पन्न कर सकता है। सिझे हुए आलू के साथ तेल या मक्खन मिलाना उचित है। आलू के साथ चर्बी जातीय खाद्य ग्रहण करने से वह आसानी से पच जाता है। आलू में वजन का ४० से ५० प्रतिशत तेल आदि मिला सकते हैं।

आलू जब नया रहे और पूर्णरूप से परिणत हो, तभी वह सर्वोत्तम होता है। पुराने आलू से इनमें तीन गुना अधिक 'सी' विटामिन रहता है। यदि आलू को एक वर्ष तक गोदाम में रखा जाय तब उसका ५० से ७० भाग 'सी' विटामिन नष्ट हो जाता है। बहुत छोटे तथा अंकुरित आलू भी अत्यन्त हानिकारक होते हैं। इनके भीतर सलामिन नाम का एक प्रकार का विष उत्पन्न होता है। सन् १९१७ ई० में अंकुरित आलू खाने से ग्लासगो शहर में एक महामारी का आविर्भाव हुआ था जिसमें बहुत से आदमी मारे गए थे। इसलिये छोटा तथा अंकुरित आलू खाना हमेशा वर्जित है।

कुछ प्रयोग

- **गुर्दे की पथरी** में उबले हुए आलू दिन में तीन बार खाएं और दिनभर में ३ लीटर पानी पीएँ। पथरी निकल जाएगी। आलू खाने से गुर्दे के अन्य रोग भी ठीक हो जाएंगे।
- कच्चे आलू के रस में नीबू का रस मिलाकर पीने से फोड़े-फुंसियों में आराम मिलेगा।
- **पतले दुबले** बच्चों को उबालकर/ भूनकर छिलके समेत आलू खिलाएं। दूध में एक दो चम्मच कच्चे आलू का रस मिला दें। एक-दो माह में बच्चे हृष्ट-पुष्ट हो जायेंगे।
- कच्चे आलू का रस निकालने के पश्चात् उस गुदे को फेंके नहीं; उसे चेहरे, हाथों-पैरों बदन पर लगाएं, त्वचा कोमल होगी, रंग साफ होगा।
- पतले-दुबले कमजोर वयस्कों को कच्चे आलू के रस में शहद मिलाकर दें। यह कमजोर बच्चों के लिए भी दिया जा सकता है।
- हाथ, पैर और **शरीर जल जाए**, गर्म-गर्म पानी या तैल पड़ जाए तो उस स्थान पर कच्चे आलू का रस लगाने से जलन भी दूर होगी और त्वचा भी जल्दी ठीक होगी।
- चोट लगने पर कच्चे आलू का रस, मैदा, अखरोट या बेसन का पेस्ट बनाकर लगावें।
- कमर दर्द, जोड़ों का दर्द व पथरी में उबले आलू अथवा भुने आलू सुबह-शाम खाएं।
- हृदय की जलन तथा गैस में भी उबले आलू खाएं अथवा दिन में दो बार कच्चे आलू का रस पीएं। खट्टी डकारें भी इससे मिटेंगी।
- कमर दर्द में कच्चे आलू को पीसकर कमर पर लगाकर पट्टी बांधने से दर्द में आराम होता है।
- आँखों के नीचे काले दाग पर आलू का रस निकालकर लगाने से दाग मिट जाते हैं।
- धूप से यदि त्वचा (चमड़ी) काली पड़ जाए तो उस स्थान पर कच्चे आलू का रस लगाने से त्वचा का रंग ठीक हो जाएगा।
- दाद, एग्जिमा, खुजली में कच्चे आलू का रस पीएं और रस को चर्म रोग वाले स्थान पर लगाएं, लाभ होगा।
- घुटने के दर्द में कच्चे आलू का रस घुटनों पर लगाएं, मैदा, बेसन या अखरोट के साथ पेस्ट बनाकर लगाएं।
- आलू उबालने के बाद उबले हुए पानी से घुटनों का सेक करें, लाभ होगा।
- घुटनों के दर्द और सूजन को दूर करने के लिए प्रातः खाली पेट, दो कच्चे आलू का रस (करीब आधा कप) निकाल कर पीएं, इसमें थोड़ा काला नमक व चार नग काली मिर्च भी स्वाद अनुसार पीसकर डाल सकते हैं। रस निकालने के लिए पहले आलू का कपड़े से रगड़ कर पानी से धोले, आलू को छीलें नहीं, फिर या तो लोहे के ओंखल (इमामदस्ता) में कूटकर उस कचूमर को सूती कपड़े से दबाकर छान लें, रस प्राप्त होगा; अथवा खोपरा घिसने की किसनी (लबूरनी) पर आलू घिसकर उस लुगदी को दबाकर रस निकाल लें और प्रयोग करें। आलू का लेस (चिपचिपा पदार्थ) घुटनों के श्लेष्मा (SYNOVIAL FLUID) काम करता है।
- प्रसूती के बाद महिलाओं के स्तनों में यदि दूध कम आता है तो उबले हुए और भुने हुए आलू दिन में दो या तीन बार खाएं, लाभ प्राप्त होगा। यदि आलू को उबालकर या भूनकर खाएं तो मोटापा कम होगा परन्तु भूल से भी आलू तलकर न खाएं, इससे मोटापा जल्दी बढ़ता है।
- मधुमेह के रोगी भी आलू खा सकते हैं, थोड़ी मात्रा में छिलके सहित उबालकर या भूनकर।
- आलू में प्रोटीन पर्याप्त मात्रा में होता है इसलिये बच्चों के शारीरिक विकास के लिए उनकी मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए आलू खिलाना लाभकारी है। वृद्धावस्था (बुढ़ापे) में आलू खाने से शक्ति मिलती है।
- आलू का रस चेहरे पर लगाने से चेहरे की मांसपेशियाँ कोमल व मजबूत रहेंगी तथा झुर्रियाँ भी नहीं पड़ेंगी।

मनोहर आश्रम, स्थान उम्मैदपुरा
पो० तारापुर (जावद) ४५८३३० जिला नीमच (म०प्र०)

यह भी खूब कही

–प्रतिष्ठा

❍ अगर आप को रात को मच्छर काटते हैं तो याद रखिये- वह मादा मच्छर होती है। नर मच्छर नहीं काटते। वे तो शाकाहारी होते हैं।

❍ आप छींकते समय अपनी आंख खुली नहीं रख सकते।

❍ ९७ प्रतिशत लोग हाथ में नई कलम आते ही सबसे पहले उससे अपना नाम लिखते हैं।

❍ मनुष्य अपने जीवन काल में छः हाथियों के वजन के बराबर खाना खा जाता है।

❍ ज्यादातर लोग अपनी जिन्दगी के नौ साल टी वी देखते हुए गुजार देते हैं।

हास्यम्

–आस्था गुड्डू

❖ एक व्यक्ति ने अपने मित्र से पूछा– माधो! तुम्हारी जेब में तीन पाई हैं, अगर उसमें एक पाई और डाल दी जाए तो बताओ कितनी पाई हो जाएँगी?
माधो– अरे, तब तो मेरी जेब फट जाएगी।
वह कैसे?
माधो– जेब में चारपाई डालोगे तो वह फटेगी नहीं तो और क्या होगा!' *(पाई क्या होती है– दादीजी से पूछो।)*

❖ रोगी– डॉक्टर, क्या चश्मा लग जाने पर मैं पढ़ सकूँगा?
डॉक्टर– बिल्कुल, फर्राटे से पढ़ लेंगे आप।
रोगी–अच्छा हुआ, मेरी पढ़ाई पर खर्च नहीं हुआ, पता नहीं लोग बच्चों को स्कूल भेजने की बजाय उन्हें एक–एक चश्मा क्यों नहीं पहना देते?

❖ ग्राहक दुकानदार से– आप के पास पेड़ों पर किताबें हैं?
दुकानदार– जी नहीं, हम सब किताबें अलमारियों में ही रखते हैं।

❖ अनु– पापा, आप कैसे नहाते हैं?
पापा– जैसे तुम नहाते हो––?
अनु– इसका मतलब आप भी नहाते हुए रोते हैं।

❖ बच्चे को डॉक्टर ने ताकतवर बनने के लिए फल छिलके सहित खाने की सलाह दी। अगले दिन बच्चा पेट दर्द से कराहता हुआ डॉक्टर के पास आया। यह पूछने पर कि क्या खाया था बच्चे ने कहा– आपने ही तो कहा था कि जो कुछ भी खाना छिलके समेत खाना, मैंने कल नारियल ही तो खाया था।

❖ अनु– देखो काकू, मैंने तुम्हें अंधेरे में भी ढूंढ़ लिया।
हरसी– (सोचकर) हूं, मैं भी सोचूँ–– मास्टर जी तुम्हें उल्लू ठीक ही तो कहते हैं।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

❖ दो पैरों का एक जानवर,
फिर भी है बेजान
सारी दुनिया को समझाए
हर पल होत महान्

❖ एक पैर की एक बालिका,
पहने लहंगा घेरदार
काम बहुत आती है सब के
जब पड़े वर्षा या धूप की मार।।

❖ नाम है मेरा तीन अक्षर का,
रहने वाला सागर तट का।
खाने में आता हूँ काम,
बोलो बच्चो मेरा नाम।!

❖ पहाड़ है पर पत्थर नहीं,
वन हैं पर पेड़ नहीं।
शहर है, पर आदमी नहीं,
नदी है पर जल नहीं।?

घड़ी, छतरी, नमक, नक्शा

विचार कणिका:

–प्रतिभा बहन

♦ ईर्ष्या तथा अहंकार को दूर करो। संगठित होकर दूसरों के लिए कार्य करना सीखो।

♦ पवित्रता, धैर्य तथा प्रयत्न के द्वारा सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। निःसन्देह सभी महान कार्य धीरे धीरे ही होते हैं।

♦ साहसी बनो और कार्य करो! धैर्य और दृढ़तापूर्वक कार्य –– यही एकमात्र मार्ग है।

♦ सात कदम एक साथ चलने से ही सत्पुरुषों में मैत्री हो जाती है।

♦ नीति कहती है कि मित्रता या शत्रुता बराबर वालों से करो।

♦ व्यक्ति को परखने का सबसे सही माध्यम है उसकी बात को परखना।

♦ सभी कार्य धैर्य से होते हैं। जल्दबाज मनुष्य सिर के बल गिरता है।

देवभूमि भारत

रासबिहारी बाबू जापान में निर्वासित जीवन बिता रहे थे। जापानी मित्रों को शिकायत थी कि जब वे सोते हैं तो अपनी चारपाई को दक्षिण पश्चिम की ओर उन्मुख करके क्यों सोते हैं। जापान में दक्षिण पश्चिम की ओर मुख करके सोना अशुभ माना जाता था। रासबिहारी मित्रों की इस शिकायत को प्रायः हंसकर टाल दिया करते थे। एक दिन कुछ नवयुवकों ने जिद पकड़ ली तो वे दीर्घ निश्वास लेकर सजल आंखों से बोले– मित्रो! यहाँ से दक्षिण पश्चिम दिशा में मेरा देश भारतवर्ष है। प्राणों से भी प्यारी मेरी भारतभूमि! इस दिशा में मुख करके सोने का मेरा उद्देश्य यह रहता है कि मैं हर रात अपनी मातृभूमि की गोद में सिर रखकर सोता हूँ। पूर्व जन्मों के कुकर्मों के कारण मैं जाग्रत अवस्था में तो अपनी मातृभूमि की गोद से वंचित हूँ, पर सुप्तावस्था में तो मुझे यह अभिशाप रोक नहीं सकता है। आज जिसे नींद में पा लेता हूँ, कल उसे जागते भी पा लूँगा। पूत कपूत हो सकता है पर माता कुमाता नहीं हो सकती। जन्म लेने पर जिसका स्तनपान किया है, मरने पर नहीं तो अगले जन्म में तो अवश्य ही मुझे मेरी मातृभूमि का स्तन्य मिलेगा।

भावविभोर नवयुवकों के सिर रासबिहारी के सामने झुक गए। एक ने कहा– इसीलिए तो हम भारत को देवभूमि कहते हैं। आपकी मातृभूमि के सिवाय भगवान् तथागत को भला और कौन सी भूमि भाती!

जो भी सीखो अच्छा सीखो

धरती से सहना सीखो।
नदिया से बहना सीखो।
तोते से रटना सीखो,
कोयल से कहना सीखो।

वृक्षों से देना सीखो।
समाज से रहना सीखो।
मां से प्यार सीखो।
पिता से दुलार व पुचकार सीखो।

गुरु से ज्ञान सीखो।
योगी से ध्यान सीखो।
चींटी से परिश्रम सीखो।
धैर्य और संयम सीखो।

अनुभव से मौन सीखो,
हरदम खुश रहना सीखो।
हिम्मत से काम लेकर,
सुख दुःख को सहना सीखो।

–प्रो० शामलाल कौशल, रोहतक

दहेज की बीमारी

□प्रवीण कुमार आर्य

कहो अब बाकी क्या बताना रहा?
हो बीमार दहेज का ये जमाना रहा।
झोलियाँ पापियों की है खाली अभी,
पर भरा न पिता का खजाना रहा।
रचाई थी शादी खुशी में आके,
लुटाया था धन दोनों हाथ बढ़ाके।
न जाना था भोगेगी संताप बेटी,
मांगेंगे पापी दोनों हाथ फैलाके।
सुनाई हैं शर्ते बंद फेरे कराके,
अभी बाकी जेबों का सजाना रहा।।
रखी पैरों में थी पगड़ी पिता ने आकर,
लगी ठोकर थी पगड़ी पे समधी की जाकर,
ना मानेंगे बात किसी की भी हम,
ले जाएंगे बारात वापिस चढ़ाकर,
मानी थी रचाई थी शादी न अब
दो पल का हंसना हंसाना रहा।
माना ये सबने कि दुल्हन दहेज है,
पर प्राणप्यारे धन का बिल्कुल ना परहेज है।
हार रस्सी का है शोभित लड़की के गले में,
सजा शमशान में लकड़ी की सेज है।
बचा ना मां बाप के हाथों में कुछ भी
बस दो दिन का रोना रुलाना रहा।
है इससे बीमार सदियों से लेकिन
न इसकी कम होती कभी देखी है शान।
कुप्रथाओं के है जाल में उलझा पर
फिर भी है मेरा भारत महान
'प्रवीण' इस बीमारी की देगा दवा जो यहाँ,
क्या अभी बाकी उस हकीम का आना रहा।।

सबसे पहले उस देवीस्वरूपा माता और देवतास्वरूप पिता की सेवा करो, उनको खुश रखो। उनकी आंखों ने साथ छोड़ दिया है तो तुम उनकी आंखें बनो। उनके पंख बनकर खुले आकाश में विचरण कराओ। उनको भूखा रखकर भगवान का भोग लगाने से तुम्हें परमात्मा मिल जाएगा, यह तुम्हारी भूल है।

कहानी

देवी-देवता

❑प्रवीण कुमार आर्य

पास के आर्यसमाज मन्दिर में एक पहुंचे हुए महात्मा आए हुए थे। हर रोज शाम को उनका प्रवचन होता था। जब ओमपाल व उसकी धर्मपत्नी को पता चला तो एक दिन खाना खाकर बच्चों समेत सत्संग में जाने लगे। ओमपाल के वृद्ध पिता ने उन्हें जाते हुए देखकर पूछा–

'कहाँ जा रहे हो बेटा?'

ओमपाल ने रुखाई से सीधा सा उत्तर दिया– 'सत्संग में।'

'बेटा मुझे भी साथ ले चलते। मैं भी कुछ सुन लेता।' पिता ने दीनता भरे स्वर में कहा।

ओमपाल गुस्से से बोला– 'आंखों कानों से दीखता सुनता नहीं। पैरों में चलने की ताकत नहीं, फिर भी इन्हें साथ ले चलो। हम वहाँ तुम्हें संभालेंगे या सत्संग सुनेंगे!'

इतना कुछ सुनने के बाद वृद्ध पिता की आगे बोलने की हिम्मत नहीं हुई।

ओमपाल सत्संग सुनने चले गए। परन्तु भूल गए कि पिता को खाना नहीं दिया है। जाकर आराम से बैठ गए।

महात्मा जी के प्रवचन का विषय था– 'परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो?' वे कह रहे थे–

'उस जगपालक परमपिता परमेश्वर को पाना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। परन्तु प्रभु दर्शन की इच्छा रखने से पहले यह मत भूलो कि उस सृष्टिकर्त्ता के अतिरिक्त वे देवी और देवता भी पूज्य हैं जिनकी कृपा से हम आज यहाँ पर सत्संग कर रहे हैं। सबसे पहले उस देवीस्वरूपा माता और देवतास्वरूप पिता की सेवा करो, उनको खुश रखो। उनकी आंखों ने साथ छोड़ दिया है तो तुम उनकी आंखें बनो। उनके पंख बनकर खुले आकाश में विचरण कराओ। उनको भूखा रखकर भगवान का भोग लगाने से तुम्हें परमात्मा मिल जाएगा, यह तुम्हारी भूल है। सबसे पहले उन्हें खुश करने का प्रयत्न करो। अगर तुम्हारे माता पिता ही खुश नहीं हुए तो वह परमपिता कैसे खुश रह सकता है।'

ओमपाल ने इतना ही सुना और पत्नी व बच्चों समेत उठकर जाने लगा। उन्हें जाते देखकर महात्मा जी बोले – 'बेटा अभी कहाँ चले?'

ओमपाल सिर झुकाकर बोला– क्षमा कीजिये स्वामीजी, हम भूल गए थे कि तैरना न आता हो तो गहरे पानी में नहीं उतरना चाहिए।

हम जिस ज्योति को जगाना चाहते हैं, उसमें न सेवा रूपी तेल है न प्रेम रूपी बाती। अभी तो पितृदर्शन ही नहीं हुआ, प्रभु दर्शन कैसे होगा? पहले माता पिता के चरणों में स्थान पा लें, फिर उस परम पिता के चरणों में भी नतमस्तक होंगे।'

यह कहकर वे जाने लगे, आत्म दर्शन का मार्ग प्रशस्त करने-- और स्वामीजी मुस्कराते हुए फिर आनन्द वर्षा करने लगे।

लघु-कथा

एडजैस्टमैंट

शादी करके ढेर सारे सपने, अरमान, उम्मीदें और नई गृहस्थी को सजाने संवारने का उत्साह लेकर वह ससुराल आई थी। दूसरे दिन पति ने समझाया, माँ ने बड़े चाव व परिश्रम से गृहस्थी बसाई है। हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। मां के बाद जैसे चाहो राज करना। एडजस्ट नहीं करोगी तो कलह ही होगा।

बेटा हुआ और उसी को लेकर अरमानों की दुनिया संजोने लगी। विवाह के चौबीस वर्ष बाद पति और छब्बीस वर्ष बाद सास का देहान्त हो गया। बेटे को फौज में कमीशन मिला। फिर उसका विवाह कर दिया। पूरी दुनिया के सुख और संतोष की कामना के साथ। एक दिन बेटे ने कहा– आपने अपने तरीके से इतने वर्ष जी लिए। अब उसे अपने तरीके से गृहस्थी चलाने दो। मां, एडजस्ट नहीं करोगी तो कलह ही होगी ना।--?

–निलय

□चन्द्रभानु आर्य

प्राचीन शिक्षा पद्धति :
श्रीकृष्ण सुदामा के गुरुकुल जीवन की एक झलक

भारत में असल ना रही नसल करते हैं नकल नरनार
भ्रम में भटक रहा संसार।।

सबसे पहले भारत में नकली ईश्वर तैयार किया।
नकली ब्रह्मा नकली विष्णु और उसका परिवार किया।
नकली देवी और देवता बस चालू रुजगार किया।
आदि से लेकर अन्त तलक बस सब नकली व्यवहार किया
कहे सब आलम होता है ब्रह्म जब ज्ञान की लगे फटकार
भ्रम में भटक रहा संसार।।१।।

नकली सोना नकली रोना नकली पीना खाना।
नकली सगे सम्बन्धी हो गये नकली देखा बतलाना।
नकली है उपदेश आज कल नकली सुनना सुनाना।
नकली राग रागनी हो गए असली नहीं रहा गाना।
है नकली यार और नकली प्यार हैं नकली रिस्तेदार।
भ्रम में भटक रहा संसार।।२।।

सुनो आप को आज एक असली इतिहास सुनाते हैं।
कृष्ण और सुदामा की कैसी थी प्रीत दिखाते हैं।।
बढ़े परस्पर प्रेम इसलिए घटना तुम्हें समझाते हैं।
दो घण्टे तक ध्यान आपका इधर दिलाना चाहते हैं।।
बन्द कर के बात सुनो बहन भ्रात कैसा होता है प्यार।
भ्रम में भटक रहा संसार।।३।।

द्रविड देश में विदर्भनगर बसता एक शहर बताते हैं।
वहीं सुदामा जी रहते थे ब्राह्मण वर्ण कहाते हैं।
विधानिधि पुर गुरुकुल में ये विद्याध्ययन को जाते हैं,
इधर कृष्ण बलराम साथ में विद्या पढ़ने आते हैं।।
कहे चन्द्रभान, करो ऐसा गान जिससे हो देश सुधार।
भ्रम में भटक रहा संसार।।४।।

गुरुकुल में सारे थे सोलह ब्रह्मचारी।
सन्दिपनि अध्यापक पंडित अधिष्ठाता अधिकारी।।

वेद और उपवेद चार ६ वेदों के अंग भाई।
६ दर्शन और महाभाष्य अष्टाध्यायी संग भाई
पाणिनी के सूत्र देख सभी रहते दंग भाई।
बुद्धिमान याद करते तकते थे मंलग भाई।।
सभी ब्रह्मचारियों का केशू जैसा रंग भाई।
कृष्ण और सुदामा को थी पढ़ने की उमंग भाई,
ज्योतिष की पुस्तकें सारी।।१।।

शारीरक और गृह्य सूत्र कोर्स में लगाये गये।
चन्द्रिका और काशिका भी शुरू से पढ़ाए गये।
वाल्मीकि के भी श्लोक कण्ठ कुछ कराए गए।
ऋषि कृत ग्रन्थ थोड़े २ सब समझाये गये।
राजनीति के भी रहस्य खोलकर समझाए गये।
साम, दाम, दण्ड, भेद रास्ते जिताये गये।।
हुई परीक्षा की तैयारी।।२।।

कक्षा में उत्तीर्ण हुए कृष्ण और बलराम देख।
सुदामा जी का भी रहा बहुत अच्छा काम देख।
बल्कि इन तीनों को मिला बहुत सा ईनाम देख।
सोलह के सोलह पास हो गये तमाम देख।
गुरुजी प्रसन्न हुए इनका इन्तजाम देख।
आर्ष पाठ सन्ध्या हवन चलें प्रातः श्याम देख।।
हर्ष हो रहा भारी।।३।।

कृष्ण और सुदामा पास होके घर को जाने लगे।
आगे फिर मिलेंगे मित्र परस्पर बतलाने लगे।
जितने थे स्नातक प्रेम-भाव दरसाने लगे।
न्यारे २ गुरु जी को दक्षिणा चुकाने लगे।
गुरु जी भी जिन्दगी के अनुभव बताने लगे।
पढ़ कर के इतिहास 'चन्द्रभान' भजन गाने लगे।
सुने प्रेम से सब नरनारी।।४।।

केरल में शिवरात्री के अवसर पर आरम्भ

पं. गुरुदत विद्यार्थी स्मारक वैदिक गवेषण ग्रंथालय प्रारम्भ

(के एम राजन द्वारा)

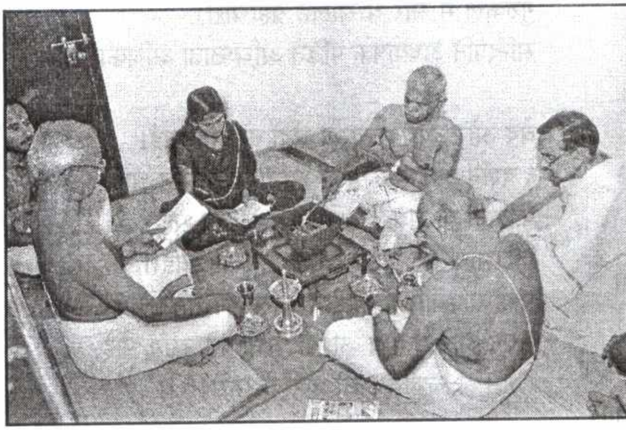

आर्य समाजम्, वेल्लिनेली के नेतृत्त्व में पंडित गुरुदत विद्यार्थी स्मारक वैदिक गवेषण ग्रंथालय का शुभारंभ शिवरात्रि के अवसर पर संपन्न हुवा। विख्यात संस्कृत विद्वान डॉ. पि. के. माधवन जी ने ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि) के शुभावसर पर इस ग्रंथालय का उद्घाटन किया। श्री ओ. एन. दामोदरन नाम्बूतिरिप्पाड की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में वेल्लिनेली आर्य समाजम् के प्रधान श्री वि. गोविन्द दास, कार्यदर्शी श्री के एम् राजन, सेवानिवृत प्रधानाचार्य श्री श्रीधर शर्मा, श्री वि एन संकरानारयानन, श्री वि रामकृष्णन् इत्यादि महत् व्यक्तियों ने भाग लिया। आर्य समाज और महर्षि दयानंद कृत वैदिक साहित्य तथा विभिन्न भाषाओं में प्रचारित वैदिक पत्रिका भी इस ग्रंथालय में जिज्ञासुओं को अध्ययन के लिए मिलेगी। इस अवसर पर ऋषि बोधोत्सव का आयोजन भी किया गया। प्रात:कालीन यज्ञ के बाद महर्षि दयानंद सरस्वती अनुस्मरण भी हुआ! श्री श्रीधर शर्म्मा ने अपने मुख्य प्रभाषण में महर्षि दयानंद की आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। आर्य समाजम की ओर से कैंसर रोग पीडित श्री जयप्रकाश जी को चिकित्सा सहाय राशि श्री ओ. एन. दामोदरन नाम्बूतिरिप्पाड ने भेंट की। बहुत श्रद्धालुओं ने एस कार्यक्रम में भाग लिया। वैदिक साहित्य का वितरण भी हुआ।

अलीगढ की जेल में गूंजी वेदों की पावन वाणी

7 से 11 मार्च तक अंचल आर्य समाज अलीगढ के महाशिवरात्रि के चतुर्दिवसीय कार्यक्रम के उपलक्ष्य में होशंगाबाद से आये हुए अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी ने एक दिन समय निकाल कर अलीगढ़ के जिला कारागार में उपस्थित 2000 कैदी भाइयों को उपदेश दिया। आपने बंदी भाईयों को स्वजीवन स्तर उठाने हेतु आह्वान किया, ऐतिहासिक उदाहरणों से जेल को साधना स्थली सिद्ध करते हुए आचार्यश्री ने दुर्गुणों के परित्याग हेतु मार्मिक अपील की। आचार्यजी के साथ 52 आर्यो का शिष्टमंडल जेल में आयोजित इस कार्यक्रम में गया था, वयोवृद्ध विद्वान श्री देव नारायण भारद्वाज जी ने कैदी भाइयों को वेद मंत्र के आधार पर आगामी जीवन सुधारने की प्रेरणा की। फरीदाबाद के श्री प्रदीप भजनोपदेशक ने नैतिक मूल्यों के समर्थन में मनोहारी भजनों का गान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जेल अधीक्षक श्री शिवप्रकाश यादव जी ने की द्यआप के नाना जी आर्यसमाज के प्रचारक रहे है अत: आप ने आगे भी ऐसे कार्यक्रम करते कराते रहने का आग्रह किया। आर्यसमाज की ओर से कारागार के पुस्तकालय हेतु आचार्यजी ने सत्यार्थप्रकाश आदि कुछ साहित्य भेंट किया। इसके बाद सभी आर्यों को जेल के मुख्य 2 स्थानों का भ्रमण कराया गया। ध्यातव्य है अलीगढ के मुस्लिम बहुल क्षेत्र होने से इस जेल में भी बड़ी संख्या में मुसलमान भाई होते है कार्यक्रम का सञ्चालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल अलीगढ के मंत्री पंकज आर्य ने किया।

हमारे कुछ प्रमुख प्रकाशन

१– वीर बालकों की कहानियाँ (सत्यसुधा शास्त्री) सच्ची ऐतिहासिक कहानियाँ ३०/–

२– स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़ (राजेशार्य आट्टा) प्रथम संस्करण १५/–

३– स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़ (राजेशार्य आट्टा) द्वितीय संस्करण २५/

४– योग परिचय १५/–

(लेखक हरिवंश वानप्रस्थी) योग के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी देने वाला अमूल्य ग्रंथ)

५– हिन्दू इतिहास वीरों की दास्तान (लेखक राजेशार्य एम०ए०) द्वितीय संस्करण ७०/–

डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा अज्ञात द्वारा लिखित हिन्दू इतिहास हारों की दास्तान की प्रामाणिक समीक्षा

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी कार्यालय

७५६/३ आदर्श नगर सुभाष चौक जींद–१२६१०२

भिवानी में हमारे अधिकृत प्रतिनिधि

हर प्रकार का वैदिक साहित्य व अन्य धार्मिक साहित्य प्राप्त करने के लिए पधारिए

दीप प्रकाशन

(वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)

कृष्णा कालोनी, माल गोदाम रोड़ गली में, भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)

नोट :

शांतिधर्मी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य के लिए व शांतिधर्मी की वार्षिक, आजीवन सदस्यता के लिए भी संपर्क कर सकते हैं।

मोबाईल-६४१६१ ६४३७१

दिन में मिलने का स्थान-

आर्य समाज घंटाघर, भिवानी

गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम बणी पुण्डरी कैथल के आचार्य स्वामी बलेश्वरानन्द जी सरस्वती को सम्मानित करके आशीर्वाद ग्रहण करते श्री चन्द्रदेव (चाँद सिंह आर्य) व अन्य श्रद्धालु।

बोदीवाली में

आदर्श विवाह व वैदिक सत्संग

ग्राम बोदीवाली में आर्यसमाज के प्रधान श्री यशवीर आर्य की दो कन्याओं का विवाह संस्कार १७-१८ मार्च को पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। नशे आदि से दूर शांत सात्विक वातावरण में सम्पन्न हुए विवाह की ग्राम वासियों व वर पक्ष के लोगों ने भूरि भूरि प्रशंसा की। १७ मार्च को यशवीर जी ने गांव में वैदिक सत्संग का आयोजन किया जिसमें चन्द्रभानु आर्य सम्पादक शांतिधर्मी के उपदेश प्रवचन हुए। श्री जबरसिंह खारी की भजन मंडली ने मधुर भजन प्रस्तु किए। भारी संख्या में ग्रामवासी स्त्री पुरुषों ने सत्संग का आनन्द लिया। विवाह संस्कार सिरसा से पधारे पुरोहित ने सम्पन्न कराया।

चौ० भलेराम आर्य को पत्नी शोक

विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं का किया दान

सुखवीर आय, तिलक नगर, रोहतक

सांघी ग्राम जिला रोहतक निवासी प्रमुख आर्यसमाजी, शांतिधर्मी के विशिष्ट सहयोगी चौ० भलेराम आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती धर्मो देवी का गत दिवस ६६ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे अपने पीछे एक बेटा और चार बेटियों सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। २४ मार्च को इन्द्रप्रस्थ कालोनी सोनीपत रोड रोहतक में उनके निमित्त श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। चौ० भलेराम आर्य परिवार ने दिवंगता की स्मृति में अनेक परोपकारी संस्थाओं को दान दिया जिसका विवरण इस प्रकार है-

आर्यसमाज सांघी - ११०००/- आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक ११००/- आर्यसमाज रूपनगर रोहतक -११००/- आर्यसमाज प्रेम नगर रोहतक- ११००/- आर्यसमाज सैनीपुरा रोहतक- ११००/- आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक -११००/- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा -११००/- आर्य कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली, देहरादून-११००/- आर्ष कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा (उ० प्र०) -११००/- आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर राजस्थान-११००/- चौ० लखीराम अनाथालय रोहतक -११००/- चौ० भरतसिंह मेमोरियल ट्रस्ट, रोहतक-११००/- गौशाला खिडवाली-११००/- गौशाला डीघल-११००/- गौशाला धड़ौली-११००/- गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत-११००/-

ओ३म्

M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो० रविन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

फार्म - IV

(देखिए नियम-8)

प्रकाशन का नाम : शांतिधर्मी
प्रकाशन का स्थान : जीन्द (हरियाणा)
प्रकाशन की अवधि : मासिक
मुद्रक का नाम : चन्द्रभानु आर्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
प्रकाशक का नाम : चन्द्रभानु आर्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
सम्पादक का नाम : चन्द्रभानु आर्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं।

चन्द्रभानु आर्य
756/3, आदर्श नगर,
सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

मैं चन्द्रभानु आर्य एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त प्रविष्ठियां मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास से सत्य हैं।

चन्द्रभानु आर्य
प्रकाशक के हस्ताक्षर

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-३-२०१३ को प्रकाशित।

संध्या रहस्य पृष्ठ २३ का शेष

ओ३म् है, जो व्याकरण में अव्यय है, अर्थात् विभक्तियों, वचनों, लिगों के हेर फेर में नहीं आता। जैसे स्वयं ईश्वर सर्व अवस्थाओं में एकरस रहता है, वैसे ही उसका नाम भी सब दशाओं में एकरूप रहता है। 'आप:' आदि विशेषण-वाची हैं, सो अपने अर्थों के अनुसार किसी वचन या लिंग के हों, इसमें हानि नहीं।

एक और शंका यह की जायगी कि 'देवी:' शब्द द्वितीयांत है, उसके अर्थ प्रथमांत क्यों लें? 'आप:' शब्द जिसका यह विशेषण है, प्रथमान्त है। इन दो का मेल कैसे हुआ? इसका उत्तर यह है कि वेद मन्त्रों में विभक्ति-व्यत्यय होने से एक विभक्ति के शब्द का अर्थ दूसरी विभक्ति में लिया जा सकता है, निम्न सूत्रानुसार-

सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजाल:। अष्टा० ७/१/३९

'शं' का अर्थ शांति है जो आनन्द शब्द से भी अधिक विशाल है। साधारणत: शान्ति तीन प्रकार की मानी गई है। (१) 'आध्यात्मिक' अर्थात् शारीरिक नैरोग्य पूर्वक आत्मिक आनन्द (२) 'आधिभौतिक' अर्थात् दूसरे प्राणियों के प्रहारों और भौतिकतापों का अभाव। (३) 'आधिदैविक' अर्थात् मन और इन्द्रियों की चंचलता और पूर्व जन्मों में संचित दु:खों के सन्ताप का नाश।

प्रत्येक कार्य के अन्त में जो तीन बार शान्ति शब्द का प्रयोग होता है, उसका अभिप्राय इन तीनों तरह के दु:खों का निवारण होता है। इस मन्त्र में शान्तिस्वरूप ईश्वर से ये तीनों वर मांगे गये हैं। यह सन्ध्या की भूमिका है अर्थात् सन्ध या करते समय प्रथम शरीर स्वच्छ और नीरोग होना चाहिये, दूसरे शत्रु का भय न हो। तीसरे मन विकाररहित हो। दिन भर यही अवस्था रहे तो और भी अच्छी बात है। सन्ध्या का वास्तविक स्वरूप और अनुष्ठान वही है।

'स्रवन्तु' शब्द इस मन्त्र में कुछ विचित्र महत्व रखता है। जैसे दही की पोटली बांधकर लटका दें और उस में से पानी बून्द २ होकर टपकता रहे, इसी प्रकार शान्ति (अभि) सब ओर से हमारे अन्दर धीरे २ प्रवेश करे। उसमें वर्षा की भान्ति वेग न हो क्योंकि वेग से शान्ति भंग हो जाती है।

जैसे 'आप:' प्रभु सब ओर है वैसे ही उसकी शान्ति भी सब ओर है। जीव उस शान्तिमय परमात्मा में लीन हुआ अभिलाषा करता है, कि ईश्वरीय आनन्द उसमें सब ओर से चुवे। यही है असली योग अथवा समाधि।

जब इस मन्त्र को पढ़ो, अपने आपको शान्ति स्वरूप 'आप:' प्रभु के शान्तिमय राज्य में जानो, और सब प्रकार के भय तथा रोगादि मिटा दो। प्रात: संध्या इस व्रत के लिये प्रतिज्ञा है और सायं सन्ध्या उस प्रतिज्ञा की पड़ताल।

आचमन क्यों करें?

यह मन्त्र पढ़ कर तीन आचमन करने की विधि है। अर्थात् तीन बार जल लेकर ब्रह्म-तीर्थ से मुख में डाला जाता है। जल इतना कि कण्ठ से नीचे उतर जाये।

प्रश्न उठता है कि आचमन क्यों करें? स्वामी जी लिखते हैं-आलस्य तथा कण्ठस्थ कफ की निवृत्यर्थ। आचमन की विधि केवल सन्ध्या ही के आदि में नहीं, किन्तु प्रत्येक यज्ञ के आरम्भ में है। सन्ध्या में भी तीन स्थानों पर आचमन किया जाता है। इसलिये इस क्रिया का महत्त्व बताने की विशेष आवश्यकता है।

कफ आदि की निवृत्ति-

जो सज्जन सभा, समाजों में आते जाते हैं, और भजनीकों तथा वक्ताओं के आलाप सुनते रहते हैं, उनको ज्ञात होगा कि जब वक्ता तथा भजनीक बोलता बोलता थक जाता है तो वह पानी का एक आध घूंट पी लेता है। कभी आदि में ही यह क्रिया कर लेता है। इसका कारण क्या है? यही कि बोलने से गला बैठ जाता है, और जल उसको फिर से साफ करके बोलने योग्य बना देता है। सन्ध्या में भी आचमन का एक प्रयोजन यही है।

आचमन और शांति-

जल का बड़ा महत्त्व यह है कि यह एक अनूठा शान्तिप्रद वस्तु है, जिसका अनुभव नहाने अथवा दो घूंट जलपान करने से हो सकता है। वैद्य कहते हैं, यदि प्रात: उठते ही थोड़ा सा पानी पी लें तो उदर सम्बन्धी कोई रोग न रहने पाए, दूसरे शब्दों में पूर्ण स्वास्थ्य स्थिर रहे, क्योंकि सब व्याधियों का मूल उदर-सम्बन्धी विकार होते हैं। पिछले दिनों एक नई चिकित्सा-विधि का अविष्कार हुआ है, जिसको Hydropothy अर्थात् जल-चिकित्सा कहते हैं। उससे डाक्टर सब रोगों की निवृत्ति जल द्वारा करते हैं। यह तो हुई शरीर सम्बन्धी अर्थात् आध्यात्मिक शांति। इसी प्रकार आधिभौतिक तथा आधिदैविक शांति भी जल से प्राप्त होती है। उदाहरणतया कोई मनुष्य किसी मानसिक क्लेश के कारण बिलख २ कर रो रहा हो। उसे ठण्डे पानी का एक घूंट पिला दो, और उसके मुख पर खूब जल के छींटे मारो, झट शान्त हो जाएगा। यही उपाय क्रोध आदि मानसिक विकारों का है। इस तीन प्रकार की शांति के लिए आचमन भी तीन बार किया जाता है। जब पहिला आचमन करो तो समझ लो कि वह अध्यात्मिक शांति देगा। जब दूसरा करो तो उससे आधिभौतिक शान्ति की इच्छा करो एवं तीसरा आचमन आधिदैविक शांति के लक्ष्य से करो।

दायित्त्व तो हमारा और आपका भी है

–शांतिधर्मी

एक कहानी है। एक बार एक हंस और हंसिनी हरिद्वार के सुरम्य वातावरण से भटकते हुए उजड़े, वीरान और रेगिस्तान के इलाके में आ गये। हंसिनी ने हंस को कहा कि ये किस उजड़े इलाके में आ गये हैं यहाँ न तो जल है, न जंगल और न ही ठंडी हवाएं हैं। यहाँ तो हमारा जीना मुश्किल हो जायेगा। भटकते 2 शाम हो गयी तो हंस ने हंसिनी से कहा कि किसी तरह आज की रात बिता लो, सुबह हम लोग हरिद्वार लौट चलेंगे।

जिस पेड़ के नीचे हंस और हंसिनी रुके थे उस पर एक उल्लू बैठा था। वह जोर 2 से चिल्लाने लगा। हंसिनी ने हंस से कहा, अरे यहाँ तो रात में सो भी नहीं सकते। ये उल्लू चिल्ला रहा है। हंस ने फिर हंसिनी को समझाया कि किसी तरह रात काट लो, मुझे अब समझ में आ गया है कि ये इलाका वीरान क्यों है? ऐसे उल्लू जिस इलाके में रहेंगे वह तो वीरान और उजड़ा रहेगा ही।

पेड़ पर बैठा उल्लू दोनों की बात सुन रहा था। सुबह हुई, उल्लू नीचे आया और उसने कहा कि हंस भाई, मेरी वजह से आपको रात में तकलीफ हुई, मुझे माफ़ कर दो। हंस ने कहा- कोई बात नही भैया, आपका धन्यवाद, यह कहकर जैसे ही हंस अपनी हंसिनी को लेकर आगे बढ़ा, पीछे से उल्लू चिल्लाया, अरे हंस मेरी पत्नी को लेकर कहाँ जा रहे हो! हंस चौंका- आपकी पत्नी? अरे भाई, यह हंसिनी है, मेरी पत्नी है, मेरे साथ आई थी- मेरे साथ जा रही है!

उल्लू जोर से बोला- खामोश रहो, ये मेरी पत्नी है। दोनों के बीच विवाद बढ़ गया। पूरे इलाके के पक्षी इकठा हो गये। कई गावों की जनता बैठी। पंचायत बुलाई गयी। पंच लोग भी आ गये। बोले- भाई किस बात का विवाद है? बताया गया कि उल्लू कह रहा है कि हंसिनी उसकी पत्नी है और हंस कह रहा है कि हंसिनी उसकी पत्नी है। लम्बी बैठक और पंचायत के बाद पञ्च लोग किनारे हो गये और कहा कि भाई बात तो यह सही है कि हंसिनी हंस की ही पत्नी है, लेकिन ये हंस और हंसिनी तो अभी थोड़ी देर में इस गाँव से चले जायेंगे। हमारे बीच में तो उल्लू को ही रहना है। इसलिए फैसला उल्लू के हक में ही सुनाना है! पंचों ने अपना फैसला सुनाया और कहा कि सारे तथ्यों और सबूतों की जांच करने के बाद यह पंचायत इस नतीजे पर पहुंची है कि हंसिनी उल्लू की पत्नी है और हंस को तत्काल गाँव छोड़ने का हुक्म दिया जाता है! यह सुनते ही हंस हैरान हो गया और रोने, चीखने और चिल्लाने लगा कि पंचायत ने गलत फैसला सुनाया। उल्लू ने मेरी पत्नी ले ली। रोते-चीखते जब वह आगे बढ़ने लगा तो उल्लू ने आवाज लगाई- ऐ मित्र हंस, रुको। हंस ने रोते हुए कहा कि भैया, अब क्या करोगे? पत्नी तो तुमने ले ही ली, अब जान भी लोगे? उल्लू ने कहा, नहीं मित्र, ये हंसिनी आपकी पत्नी थी, है और रहेगी। लेकिन कल रात जब मैं चिल्ला रहा था तो आपने अपनी पत्नी से कहा था कि यह इलाका उजड़ा और वीरान इसलिए है क्योंकि यहाँ उल्लू रहता है।

मित्र, ये इलाका उजड़ा और वीरान इसलिए नहीं है कि यहाँ उल्लू रहता है। यह इलाका उजड़ा और वीरान इसलिए है क्योंकि यहाँ पर ऐसे पञ्च रहते हैं जो उल्लूओं के हक में फैसला सुनाते हैं!

शायद 65 साल कि आजादी के बाद भी हमारे देश की दुर्दशा का मूल कारण यही है कि हमने हमेशा अपना फैसला उल्लुओं के ही पक्ष में सुनाया है। यही कारण है कि इस देश में उल्लू बढ़ते ही जा रहे हैं और हंस विलुप्त होते जा रहे हैं। आतंकवाद की, कानून व्यवस्था की-बलात्कार की कितनी भी बड़ी घटना हो जाए, दो मगरमच्छी आंसू बहाकर सब ठीक हो जाता है। कानून वाले कहते हैं- कानून से काम नहीं चलेगा.... हम आतंकवादी जी से बात करेंगे.. पुलिस के अधिकारी कहते हैं छोटे अधिकारियों का कसूर है.. संस्कारवादी कहते हैं संस्कार बिगड़ रहे हैं। नारी अधिकारवादी कहते हैं कम कपड़े पहनने से कुछ नहीं होता..

इस देश की बदहाली और दुर्दशा के लिए आखिर कोई जिम्मेवार है या नहीं? देशरक्षा में शहीद हुए वीरों की विधवाएं, मासूम दामिनी और गुडिया पूछ रही हैं-

मैं किसको कत्ल का इल्जाम दूं जमाने में
हरेक शख्स फरिश्ता दिखाई देता है।।

आर्य समाज जीन्द जंक्शन द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द जयंती समारोह में अतिथियों का सम्मान, उपस्थित श्रद्धालु व ऋषि लंगर के दृश्य।

ओ३म्

श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

चोटीपुरा रजबपुर (ज्योतिबाफुले नगर)

❀ भारत के लगभग १२ प्रान्तों की ५५० कन्याएँ गुरुकुल के सादगीपूर्ण व सात्त्विक वातावरण में विद्याभ्यास व व्रताभ्यास करती हुई शैक्षिक एवं क्रीडाक्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं।

शैक्षिक क्षेत्र

✦ वार्षिक परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत एवं ७० प्रतिशत से अधिक अंक। ✦ कु० विभूति द्वारा एम० ए० संस्कृत में (रुहेलखण्ड विवि) स्वर्ण पदक ✦ इस वर्ष १५ स्नातिकाओं द्वारा विवि अनुदान आयोग (यू जी सी) की नेट एवं जे आर एफ परीक्षाएँ उत्तीर्ण

✦ नवम्बर २०१२ में अजमेर में आयोजित वेदकण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता के अन्तर्गत यजुर्वेद व सामवेद प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान ✦ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित २०१२-१३ की 'राज्यस्तरीय शास्त्रीय स्पर्धा' में धातुरुप कण्ठपाठ, काव्यकण्ठपाठ व पुराणेतिहासशलाका में प्रथम व अष्टाध्यायी कण्ठपाठ में द्वितीय स्थान।

✦ अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा काव्यकण्ठपाठ में ब्र० नेहा ने स्वर्णपदक तथा १० सहस्र की पुरस्कार राशि के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया। भीमद्भगवद्गीता शलाका प्रतियोगिता में ब्र० सीता ने ५ सहस्र की पुरस्कार राशि के साथ कांस्य पदक प्राप्त किया। धातुरुप कण्ठपाठ में ब्र० अनु ने पांच हजार की पुरस्कार राशि के साथ कांस्य पदक प्राप्त किया।

क्रीडा क्षेत्र

✦ 'क्रीडा भारती' मेरठ द्वारा आयोजित 'पश्चिमी उत्तरप्रदेश योगासन प्रतियोगिता-२०१२' में विभिन्न आयु वर्ग में कु० विजेता व किरण द्वारा प्रथम स्थान। ✦ ३० वीं राज्य योग चैम्पियनशिप में पांच ब्रह्मचारिणियों ने अपने आयु वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ✦ नवम्बर २०१२ में राज्यस्तरीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता में गुरुकुल की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्टेट आर्चरी चैम्पियनशिप जीती तथा व्यक्तिगत प्रदर्शन में प्राची, प्राची व नलिनी ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किये।

✦ धनुर्विद्या में राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर अनेक उल्लेखनीय कीर्तिमान। ✦ विभिन्न देशों में ओलम्पिक, वर्ल्ड कप, एशियन आदि खेलों में प्रतिभागिता व अनेक बार 'सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर' सम्मान।

✣ सभी होनहार छात्राएँ बधाई की पात्र हैं। ✣ गुरुकुल अपने सभी सहयोगी बंधुओं का आभारी है।

आचार्या सुमेधा (प्राचार्या)

P.O. Rajabpur, Distt. Moradabad-244236 (UP) India.
Phone: +91-5922-245208, +91-94123-22258, e-mail: gurukulchotipura@yahoo.com